दशकुमारचरितसारः



उत्तरप्रदेश की इण्टरमीडिएट परीक्षा के लिए स्वीकृत

दशकुमारचरितसारः

संग्रहकार :—

डॉ० सत्यव्रत सिंह

एम० ए०, पी-एच० डी०, शास्त्री, साहित्याचार्य

प्राध्यापक संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रकाशक :—

चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी-१

ई० १९६१]

[मूल्य ८७ न० पै०

राष्ट्र-गीत

जन-गण-मन-अधिनायक ! जय हे
भारत-भाग्य-विधाता !
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-वंग
विन्ध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय-गाथा,
जन-गण-मंगल-दायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता !
जय हे, जय हे, जय हे !
जय, जय, जय, जय हे !

आमुख

संस्कृत के प्रसिद्ध गद्यकार महाकवि दण्डी के 'दशकुमारचरित' का यह 'सार'—संकलन संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है। संस्कृत के गद्य-साहित्य में महाकवि दण्डी की भाषा की कुछ अपनी ही विशेषतायें हैं जिनमें छोटे-छोटे समस्त पद, श्रुतिमधुर शब्दावली, मुहावरों का प्रयोग आदि प्रमुख हैं। आशा है इस 'संकलन' से संस्कृत के विद्यार्थियों का मनोरंजन भी होगा और संस्कृत लिखने का अभ्यास भी बढ़ेगा।

—संग्रहकार

भूमिका

महाकवि दण्डी

'दशकुमारचरित' के रचयिता का युग यदि सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाय तो कोई आपत्ति नहीं। संस्कृत साहित्य के इतिहास में छठी-सातवीं शताब्दी का समय गद्यकाव्य के पूर्ण विकास का युग है। संस्कृत का पद्यकाव्य तो पहले से ही पूर्णतया विकसित हो चुका था। नवीनता के पुजारी कतिपय प्रतिभाशाली कवियों ने 'गद्य' को कविता का माध्यम बनाया और 'पद्य' की प्रतिस्पर्द्धा में 'गद्य' को ला खड़ा किया। इन गद्यकवियों में 'सुबन्धु' और 'बाण' के साथ 'दण्डी' का ही नाम आता है। 'दण्डी', 'सुबन्धु' और 'बाण' की कृतियाँ वस्तुतः संस्कृत गद्यकाव्य की 'रत्नत्रयी' हैं।

संस्कृत के महाकवियों में 'दण्डी' का एक अपना ही स्थान है। 'दण्डी' के संबन्ध में एक प्राचीन प्रशस्ति है—'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः' अर्थात् यह निःसन्दिग्ध है कि दण्डी और जो कुछ भी हों, कवि अवश्य हैं। संस्कृत के किसी लेखक के संबन्ध में ऐसी प्रशस्ति नहीं सुनने में आती। इस प्रशस्ति में दण्डी की बहुमुखी प्रतिभा के साथ-साथ उनकी कवि-प्रतिभा का संकेत स्पष्ट है।

'दण्डी' के तीन काव्य-प्रबन्धों की एक अनुश्रुति है—

त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः॥

अर्थात् जैसे इसमें कोई संदेह नहीं कि अग्नि और देवता तथा वेद और

गुण की 'त्रयी' लोकप्रसिद्ध है वैसे ही यह भी निःसन्दिग्ध है कि दण्डी की प्रबन्धत्रयी सर्वविदित है।

दण्डी की यह 'प्रबन्धत्रयी' क्या है ? इसका निर्णय अभी निःसन्दिग्ध नहीं हुआ है । 'दशकुमारचरित' और 'काव्यादर्श' तो निश्चित रूप से दण्डी की रचनायें हैं किन्तु तीसरी कृति के संबन्ध में अभी तक यह निश्चित नहीं कि यह कृति 'छन्दोविचिति' है या 'अवन्तिसुन्दरी-कथा' या 'द्विसन्धान-काव्य'।

'दशकुमारचरित' दण्डी की कृति है इसमें कोई संदेह अथवा विवाद नहीं।

दशकुमारचरित

दण्डी का 'दशकुमारचरित' संस्कृत का एक 'उपन्यास' सा लगता है। इसकी कथावस्तु दण्डी की कल्पना से निकली है और इसके चरित्रचित्रण में दण्डी की, समसामयिक जीवन की निरीक्षण-शक्ति का हाथ है।

'दशकुमारचरित' एक गद्यकाव्य है जिसमें इसके रचयिता की प्रतिभा ने जनकथाओं को काव्यशैली में प्रस्तुत किया है । इन जनकथाओं का कथासूत्र सामाजिक जीवन की विविधता की भाँति भिन्न-भिन्न रूप का है । यह 'कथासूत्र' दण्डी के समय के सामाजिक जीवन की सभी विशेषताओं, जैसे कि मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास, पुरुष-बलि, आदि-आदि के मिश्रण से बना है। दण्डी ने 'राम के समान आचरण करो' का उपदेश नहीं दिया है अपितु 'रावण के आचार-व्यवहार' का ऐसा सुन्दर और जीता-जागता चित्र खींचा है जो मनोरञ्जक होने के साथ-साथ अन्त में यही शिक्षा दिया करता है कि 'रावण के समान आचरण कदापि न करो'। दण्डी के चित्रित चरितों में कूटनीतिज्ञ सचिव, साहसप्रिय राज्याधिकारी, कलानिपुण वेश्याजन, तान्त्रिक ब्राह्मण आदि-आदि अनेक ऐसे चरित हैं जो अपनी सजीवता और लोकप्रियता में अन्यत्र अलभ्य हैं।

महाकवि दण्डी की शैली

दण्डी की गद्यशैली की कई एक विशेषतायें हैं। 'सरलता' इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। सुबन्धु का गद्य 'प्रत्यक्षरश्लेषमय' है और बाण का गद्य है 'सरसस्वरवर्णपदमय'। दण्डी का गद्य इन दोनों महाकवियों के गद्य से भिन्न है। दण्डी के गद्य में न तो पदों की श्लिष्टता की बानगी दीख पड़ती है और न उनकी क्लिष्टता से ही पाठक का मन ऊबता है।

दण्डी के प्रयुक्त पद 'सुप्रयुक्त' हैं। जैसे कि—'भूवल्लभ ! कुशसमिदानयनाय वनं गतेन मया काचिदशरण्या व्यक्तकार्पण्याऽश्रु मुञ्चन्ती वनिता विलोकिता।' आदि वाक्यों में व्यवहृत पद ऐसे हैं जिनसे साधारण संस्कृत-पाठक भी अपने आपको अपरिचित नहीं कह सकता।

सुप्रयुक्त पदों की 'सुन्दरता' दण्डी की गद्यशैली की दूसरी विशेषता है। इस सुन्दरता में आपको अनुप्रास की छटा मिलेगी और यदा-कदा यमक का भी आभास दिखायी देगा। उदाहरण के लिये इसी वाक्य को लीजिये—

'तत्र विरचितारातिसन्तापेन प्रतापेन सतततुलितवियन्मध्यहंसः राजहंसो नाम घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसोदर्यहृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव।' यहाँ अनुप्रास की भी झाँकी है और यमक की भी छटा है। यहाँ अनुप्रास की झाँकी में वर्णों की झङ्कार सुनाई देती है और यमक की छटा में वर्णों की रँगरेली का दर्शन होता है।

दण्डी के गद्य की 'मितव्ययिता' भी प्रसिद्ध है। बाण के गद्य के लिये तो यह कहा जा सकता है कि उस पर समस्त साहित्यिक साधनों का महान् व्यय हुआ है किन्तु दण्डी का गद्य कम से कम साहित्यिक साधनों से ही सुन्दर लगता है और प्रभावशाली भी प्रतीत होता है।

दण्डी के गद्य का प्रवाह भी दर्शनीय है। पहाड़ी झरने की भाँति सम-विषम स्थानों पर बहना-अटकना और वेग से चल निकलना, दण्डी के गद्य-प्रवाह की एक अपनी ही विशेषता है।

दण्डी के दशकुमारचरित में तीनों प्रकार के गद्यों की झाँकी यत्र-तत्र मिल जाती है। दण्डी का 'चूर्णक' गद्य जिसमें कोमल वर्ण और अल्प समास अपेक्षित हैं, बड़ा रोचक लगा करता है—

'लावण्योपमितपुष्पसायक ! भूनायक !! भवानेव भाविन्यपि जन्मनि वल्लभो भवतु।'

दण्डी ने उस गद्य की भी रचना की है जिसको 'वृत्तगन्धि' अथवा 'वृत्त या छन्द की विशेषता से पूर्ण' कहा गया है। नीचे लिखे वाक्य को पढ़िये—

अनतिवलिततनुतरोदरम्,......आननेन्दुसम्मुखालकलतं च विश्रब्ध-प्रसुप्तामतिधवलोत्तरच्छदनिमग्नप्रायैकपार्श्वतया चिरविलसनखेदनिश्चलां शरदम्भोधरोत्सङ्गशायिनीमिव सौदामिनीं राजकन्यामपश्यम्।' यहाँ चिह्नित पद छन्दों की यति और गति की माधुरी लिये विराजमान हैं।

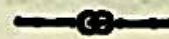
इसी भाँति 'उत्कलिकाप्राय' गद्य भी, जिसमें कठोर अक्षर और समास-बाहुल्य रहा करता है, दशकुमारचरित में जहाँ-तहाँ दिखायी ही पड़ा करता है—

'तत्र वीरभटपटलोत्तरङ्गतुरङ्गकुञ्जरमकरभीषणसकलरिपुगणकटक-जलनिधिमथनमन्दरायमाणसमुद्दण्डभुजदण्डमण्डलः......।'

संस्कृत गद्य की इन विशेषताओं से विशिष्ट 'दशकुमारचरित' संस्कृत के विद्यार्थियों के लिये इस दृष्टि से भी अत्यन्त उपयोगी है कि इसके अध्ययन से संस्कृत की शुद्ध लेखनशैली का जैसा ज्ञान हो सकता है वैसा अन्य गद्यकाव्यों के अध्ययन से नहीं हो पाता।



विषय-सूची



दशकुमारचरितसारः

अस्ति समस्तनगरीनिकषायमाणा मगधदेशशेखरीभूता पुष्पपुरी नाम नगरी। तत्र विरचितारातिसन्तापेन प्रतापेन सतततुलितवियन्मध्यहंसः, राजहंसो नाम घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसोदर्यहृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव। तस्य वसुमती नाम सुमती लीलावती-कुलशेखरमणी रमणी बभूव।

मगधराजः

राजहंसः

विजितामरपुरे पुष्पपुरे निवसता साऽनन्तभोगलालिता वसुमती वसुमतीव मगधराजेन यथासुखमन्वभावि।

तस्य राज्ञः परमविधेया धर्मपालपद्मोद्भवसितवर्मनामधेयाः कुलामात्यास्त्रयोऽभूवन्।

तेषां सितवर्मणः सुमतिसत्यवर्माणौ, धर्मपालस्य सुमन्त्र-सुमित्रकामपालाः, पद्मोद्भवस्य सुश्रुतरत्नोद्भवाविति तनयाः समभूवन्।

ततः कदाचिन्मगधनायको मालवेश्वरं प्रत्यग्रसङ्ग्रामघस्मरं समुत्कटमानसारं मानसारं प्रति सहेलं भेरीझाङ्कारेण दिग्दन्तावलवलयं विघूर्णयन् चतुरङ्गबलेन संयुतः सङ्ग्रामाभिलाषेण रोषेण महताविष्टो निर्ययौ। मालवनाथोऽप्यनेकानेकपयूथसनाथो विग्रहः सविग्रह इव साग्रहोऽभिमुखीभूय भूयो निर्जगाम।

राजहंसस्य मालवाभियानम्

तयोरथ शस्त्राशस्त्रि हस्ताहस्ति परस्पराभिहतसैन्यं जन्यमजनि।

तत्र मगधराजः प्रक्षीणसकलसैन्यमण्डलं मालवराजं जीवग्राहमभिगृह्य कृपालुतया पुनरपि स्वराज्ये प्रतिष्ठापयामास।

ततः स रत्नाकरमेखलामिलामनन्यशासनां शासदनपत्यतया नारायणं सकललोकैककारणं निरन्तरमर्चयामास।

अथ कदाचित्तदग्रमहिषी 'देवि! देवेन कल्पवल्लीफलमाप्नुहि' इति प्रभातसमये सुस्वप्नमवलोकितवती। सा तदा दयितमनोरथपुष्पभूतं गर्भमधत्त। राजापि सम्पन्न्यकृताखण्डलः सुहृन्नृपमण्डलं समाहूय निजसम्पन्मनोरथानुरूपं देव्याः सीमन्तोत्सवं व्यधत्त।

राजवाहनजन्मसंबन्धी वसुमतीस्वप्नः

एकदा हितैः सुहृन्मन्त्रिपुरोहितैः सभायां सिंहासनासीनो गुणैरहीनो ललाटतटन्यस्ताञ्जलिना द्वारपालेन

व्यज्ञापि–'देव, देवसन्दर्शनलालसमानसः कोऽपि देवेन विरच्यार्चनार्हो यतिर्द्वारदेशमध्यास्ते' इति।

तदनुज्ञातेन तेन स संयमी नृपसमीपमनायि।

भूपतिरायान्तं तं विलोक्य सम्यग्ज्ञाततदीयगूढचारभावो निखिलमनुचरनिकरं विसृज्य मन्त्रिजनसमेतः प्रणतमेनं मन्दहासमभाषत–'ननु तापस, देशं सापदेशं भ्रमन् भवांस्तत्र तत्र भवदभिज्ञातं कथयतु' इति।

तेनाभापि–'देव, शिरसि देवस्याज्ञामादायैनं निर्दोषं वेषं स्वीकृत्य मालवेन्द्रनगरं प्रविश्य तत्र गूढतरं वर्तमानस्तस्य राज्ञः समस्तमुदन्तजातं विदित्वा प्रत्यागमम्।

मानी मानसारः भवतः पराजयमनुभूय महाकालनिवासिनं कालीविलासिनमनश्वरं महेश्वरं समाराध्य तपःप्रभावसन्तुष्टादस्मादेकवीरारातिघ्नीं भयदां गदां लब्ध्वात्मानमप्रतिभटं मन्यमानो महाभिमानो भवन्तमभियोक्तुमुद्युङ्क्ते। ततः परं देव एव प्रमाणम्' इति। तदालोच्य निश्चिततत्कृत्यैरमात्यै राजा विज्ञापितोऽभूत्—

मालवराजकृतं राजहंसाभिषेणनम्

'देव, निरुपायेन दैवसहायेन योद्धुमरातिरायाति । तस्मादस्माकं युद्धं साम्प्रतमसाम्प्रतम् । सहसा दुर्गसंश्रयः कार्यः' इति ।

तैर्बहुधा विज्ञापितोऽप्यखर्वेण गर्वेण विराजमानो राजा तद्वाक्यमकृत्यमित्यनादृत्य प्रतियोद्धुमना बभूव ।

मानसारो योद्धुमनसामग्रीभूय सामग्रीसमेतोऽक्लेशं मगधदेशं प्रविवेश ।

तदा तदाकर्ण्य मन्त्रिणो भूमहेन्द्रं मगधेन्द्रं कथञ्चिदनुनीय रिपुभिरसाध्ये विन्ध्याटवीमध्येऽवरोधान् मूलबलरक्षितान्निवेशयामासुः ।

राजहंसस्तु प्रशस्तवीतदैन्यसैन्यसमेतस्तीव्रगत्या निर्गत्याधिकरुषं द्विषं रुरोध ।

मालवनाथो जयलक्ष्मीसनाथो मगधराज्यं प्राज्यं समाक्रम्य पुष्पपुरमध्यतिष्ठत् ।

तत्र अमात्या राजानं समन्तादन्वीक्ष्यानवलोकितवन्तो दैन्यवन्तो देवीमवापुः । वसुमती तु तेभ्यो निखिलसैन्यक्षतिं

राजहंसपराजयः

राज्ञोऽदृश्यत्वं चाकर्ण्योद्विग्ना शोकसागरमग्ना रमणानुगमने मतिं व्यधत्त । 'कल्याणि, भूरमणमरणमनिश्चितम् । किञ्च सार्वभौमोऽभिरामो भविता सुकुमारः

कुमारस्त्वदुदरे वसति। तस्मादद्य तव मरणमनुचितम्' इत्यमात्यपुरोहितैरनुनीयमानया तया क्षणं क्षणहीनया तूष्णीमस्थायि।

अथार्धरात्रे शोकपारावारमपारमुत्तर्तुमशक्नुवती क्वचिदुत्तरीयार्धेन बन्धनं मृतिसाधनं विरच्य मर्तुकामाभिरामा साश्रुकण्ठा व्यलपत्—'लावण्योपमितपुष्पसायक,

वसुमतीविलापः

भूनायक, भवानेव भाविन्यपि जन्मनि वल्लभो भवतु' इति। तदाकर्ण्य मागधो देवीवाक्यमेव निश्चिन्वानः शनैस्तामाह्वयत्।

सा ससम्भ्रममागत्याऽमन्दहृदयानन्द-सम्फुल्ल-वदनारविन्दा विकस्वरेण स्वरेण पुरोहितामात्यजनमुच्चैराहूय तेभ्यस्तमदर्शयत्।

राजा अमात्यैरभाणि—'देव, रथ्यचयः सारथ्यपगमे रथं रभसादरण्यमनयत्' इति।

'तत्र निहतसैनिकग्रामे सङ्ग्रामे मालवपतिना गदया दयाहीनेन ताडितो मूर्च्छामागत्यात्र वने निशान्तपवनेन बोधितोऽभवम्' इति महीपतिरकथयत्।

ततो मन्त्रिनिवहेन शिबिरमानीयापनीताशेषशल्यो राजा सहसा विरोपितव्रणोऽकारि ।

तया वसुमत्या मत्याकलितया च सम्बोधि—

'देव, सकलस्य भूपालकुलस्य मध्ये तेजोवरिष्ठो गरिष्ठो भवानद्य विन्ध्यवनमध्यं निवसतीति जलबुद्बुदसमाना विराजमाना सम्पत्तडिल्लतेव सहसैवोदेति नश्यति च । तन्निखिलं दैवायत्तमेवावधार्य कार्यम्' इति ।

ततः सकलसैन्यसमन्वितो राजहंसस्तपोविभ्राजमानं वामदेवनामानं तपोधनं निजाभिलापावाप्तिसाधनं जगाम । तं प्रणम्य तेन कृतातिथ्यो निजराज्याभिलाषी मितभाषी सोमकुलावतंसो राजहंसो मुनिमभाषत—'भगवन्, मानसारः प्रबलेन दैवबलेन मां निर्जित्य मद्भोग्यं राज्यमनुभवति । तद्वदहमप्युग्रं तपो विरच्य तमरातिमुन्मूलयिष्यामि लोकशरण्येन भवत्कारुण्येनेति नियमवन्तं भवन्तं प्राप्नवम्' इति ।

राजहंसस्य वामदेवाश्रमगमनम्

ततस्तपोधनो राजानमवोचत्—'सखे, शरीरकार्श्यकारिणा तपसालम् । वसुमतीगर्भस्थः सकलरिपुकुलमर्दनो राज-

नन्दनो नूनं सम्भविष्यति, कञ्चन कालं तूष्णीमास्स्व' इति।

गगनचारिण्यापि वाण्या 'सत्यमेतत्' इति तदेवावाचि। राजापि मुनिवाक्यमङ्गीकृत्यातिष्ठत्।

ततः सम्पूर्णगर्भदिवसा वसुमती सुमुहूर्ते सकललक्षणलक्षितं सुतमसूत। ब्रह्मवर्चसेन तुलितवेधसं पुरोधसं पुरस्कृत्य कृत्यविन्महीपतिः कुमारं सुकुमारं राजवाहननामानं व्यधत्त। तस्मिन्नेव काले सुमतिसुमित्रसुमन्त्रसुश्रुतानां मन्त्रिणां प्रमतिमित्रगुप्तमन्त्रगुप्तविश्रुताख्याः सूनवः समजायन्त। राजवाहनो मन्त्रिपुत्रैरात्ममित्रैः सह बालकेलीरनुभवन्नवर्धत।

राजवाहन-जन्म

अथ कदाचिदेकेन तापसेन रसेन कञ्चिन्नयनानन्दकरं सुकुमारं कुमारं राज्ञे समर्प्यावाचि—"भूवल्लभ, कुशसमिदानयनाय वनं गतेन मया काचिदशरण्या व्यक्तकार्पण्याश्रु मुञ्चन्ती वनिता विलोकिता।

निर्जने वने किन्निमित्तं रुद्यते त्वया इति पृष्टा सा करसरोरुहैरश्रु प्रमृज्य सगद्गदं मामवोचत्—'मुने, लावण्यजितपुष्पसायके मिथिलानायके निजसुहृदो मगधराजस्य सीमन्तिनीसीमन्त-

महोत्सवाय पुत्रदारसमन्विते पुष्पपुरमुपेत्य कञ्चन कालमधिवसति मालवाधीशो मगधराजं योद्धुमभ्यगात् ।

तत्र प्रख्यातयोरेतयोरसंख्ये संख्ये वर्तमाने सुहृत्साहाय्यकं कुर्वाणो विदेहेश्वरः प्रहारवर्मा जयवता रिपुणाभिगृह्य कारुण्येन पुण्येन विसृष्टो हतावशेषेण शून्येन सैन्येन सह स्वपुरगमनमकरोत् । ततो वनमार्गेण दुर्गेण गच्छन्नधिकबलेन शबरबलेन रभसादभिहन्यमानः स महानिरोधः पलायिष्ट । तदीयार्भकयोर्यमयोर्धात्रीभावेन परिकल्पिताऽहं मद्दुहितापि तीव्रगतिं भूपतिमनुगन्तुमक्षमे अभूव । तत्र विवृतवदनः कोऽपि रूपी कोप इव व्याघ्रः शीघ्रं मामाघ्रातुमागतवान् । भीताहमुदग्रग्राव्णि स्खलन्ती पर्यपतम् । मदीयपाणिभ्रष्टो बालकः कस्यापि कपिलाशवस्य क्रोडमभ्यलीयत ।

उपहारवर्मोत्पत्तिकथा

तच्छवाकर्षिणोऽमर्षिणो व्याघ्रस्य प्राणान्बाणो बाणासनयन्त्रमुक्तोऽपाहरत् । लोलालको बालकोऽपि शबररादाय कुत्रचिदुपानीयत । कुमारमपरमुद्वहन्ती मद्दुहिता कुत्र गता न जाने । साहं मोहं गता केनापि कृपालुना वृष्णिपालेन स्वकुटीरमावेश्य विरोपितव्रणाभवम् । ततः स्वस्थीभूय भूयः क्ष्माभर्तुरन्तिकमुपतिष्ठासुरसहायतया दुहितुरनभिज्ञाततया च व्याकुलीभवामि

इत्यभिदधाना 'एकाकिन्यपि स्वामिनं गमिष्यामि' इति सा तदैव निरगात् ।

अहमपि भवन्मित्रस्य विदेहनाथस्य विपन्निमित्तं विषादमनुभवंस्तदन्वयाङ्कुरं कुमारमन्विष्यंस्तदैकं चण्डिकामन्दिरं सुन्दरं प्रागाम् ।

तत्र कुमारं देवतोपहारं करिष्यन्तः किराताः मया समभ्यभाष्यन्त—'ननु किरातोत्तमाः, घोरप्रचारे कान्तारे स्खलितपथः स्थविरभूसुरोऽहं मम पुत्रकं क्वचिच्छायायां निक्षिप्य मार्गान्वेषणाय किञ्चिदन्तरमगच्छम् ।

स कुत्र गतः, केन वा गृहीतः, परीक्ष्यापि न वीक्ष्यते । किं करोमि, क्व यामि, भवद्भिर्न किमदर्शि' इति ।

'द्विजोत्तम, कश्चित्तत्र तिष्ठति । किमेष तव नन्दनः सत्यमेव । तदेनं गृहाण' इत्युक्त्वा दैवानुकूल्येन मह्यं तं व्यतरन् ।

तेभ्यो दत्ताशीरहं बालकमङ्गीकृत्य निःशङ्कं भवदङ्कं समानीतवानस्मि । एनमायुष्मन्तं पितृरूपो भवानभिरक्षतात्" इति ।

राजा तमुपहारवर्मनाम्नाहूय राजवाहनमिव पुपोष ।

जनपतिरेकस्मिन् पुण्यदिवसे तीर्थस्नानाय पक्कणनिकट-

मार्गेण गच्छन्नबलया कयाचिदुपलालितमनुपमशरीरं कुमारं कश्चिदवलोक्य कुतूहलाकुलस्तामपृच्छत्—

अपहारवर्म-जन्म-कथा

'भामिनि, रुचिरमूर्तिरसावर्भकः कस्य नयनानन्दनः, निमित्तेन केन भवदधीनो जातः, कथ्यतां याथातथ्येन त्वया' इति। प्रणतया तया शबर्या सलीलमलापि—'राजन्, शक्रसमानस्य मिथिलेश्वरस्य सर्वस्वमपहरति शबरसैन्ये मद्दयितेनापहृत्य कुमार एष मह्यमर्पितो व्यवर्धत' इति।

तदवधार्य कार्यज्ञो राजा मुनिकथितं द्वितीयं राजकुमारमेव निश्चित्य सामदानाभ्यां तामनुनीयापहारवर्मेत्याख्याय देव्यै 'वर्धय' इति समर्पितवान्।

कदाचिद्वामदेवशिष्यः सोमदेवशर्मा नाम कश्चिदेकं बालकं राज्ञः पुरो निक्षिप्याभाषत—"देव, रामतीर्थे स्नात्वा प्रत्यागच्छता मया काननावनौ वनितया कयापि धार्यमाण-

पुष्पोद्भवोत्पत्ति-कथा

मेनमुज्ज्वलाकारं कुमारं विलोक्य सादरमभाणि—'स्थविरे, का त्वम्? एतस्मिन्नटवीमध्ये बालकमुद्वहन्ती किमर्थमायासेन भ्रमसि' इति।

वृद्धयाप्यभाषि—'मुनिवर, कालगुप्तो नाम धनाढ्यो वैश्यवरः कश्चिदस्ति। तन्नन्दिनीं सुवृत्तां नामैतस्माद् द्वीपादागतो

मगधनाथमन्त्रिसम्भवो रत्नोद्भवो व्यवहार्युपयम्य सुवस्तुसम्पदा श्वशुरेण सम्मानितोऽभूत् । कालक्रमेण नताङ्गी गर्भिणी जाता ।

ततः सोदरविलोकनकौतूहलेन रत्नोद्भवः कथञ्चिच्छ्वशुरमनुनीय चपललोचनया सह प्रवहणमारुह्य पुष्पपुरमभिप्रतस्थे । कल्लोलमालिकाभिहतः पोतः समुद्राम्भस्यमज्जत् ।

गर्भभरालसां तां ललनां धात्रीभावेन कल्पिताहं कराभ्यामुद्वहन्ती फलकमेकमधिरुह्य दैवगत्या तीरभूमिमगमम् । सुहृज्जनपरिवृतो रत्नोद्भवस्तत्र निमग्नो वा केनोपायेन तीरमगमद्वा न जानामि । क्लेशस्य परां काष्ठामधिगता सुवृत्तास्मिन्नटवीमध्येऽद्य सुतमसूत । प्रसववेदनया विचेतना सा प्रच्छायशीतले तरुतले निवसति । विजने वने स्थातुमशक्यतया जनपदगामिनं मार्गमन्वेष्टुमुद्युक्तया मया विवशायास्तस्याः समीपे बालकं निक्षिप्य गन्तुमनुचितमिति कुमारोऽप्यनायि' इति ।

तस्मिन्नेव क्षणे वन्यो वारणः कश्चिददृश्यत । तं विलोक्य भीता सा बालकं निपात्य प्राद्रवत्, अहं समीपलतागुल्मके प्रविश्य परीक्षमाणाऽतिष्ठम्, निपतितं बालकं पल्लवकवलमिवाददति गजपतौ कण्ठीरवो महाग्रहेण न्यपतत । भयाकुलेन दन्तावलेन

झटिति वियति समुत्पात्यमानो बालको न्यपतत्। चिरायुष्मत्तया स वानरेण केनचित्पक्कफलबुद्ध्या परिगृह्य फलेतरतया विततस्कन्धमूले निक्षिप्तोऽभूत्। सोऽपि मर्कटः क्वचिदगात्।

बालकेन सत्त्वसम्पन्नतया सकलक्लेशसहेनाभावि। केसरिणा करिणं निहत्य कुत्रचिदगामि। लतागृहान्निर्गतोऽहमपि तेजःपुञ्जं बालकं शनैरवनीरुहादवतार्य वनान्तरे वनितामन्विष्याविलोक्यैनमानीय गुरवे निवेद्य तन्निदेशेन भवन्निकटमानीतवानस्मि" इति।

महदाश्चर्यं बिभ्राणो राजा 'रत्नोद्भवः कथमभवत्' इति चिन्तयंस्तन्नन्दनं पुष्पोद्भवनामधेयं विधाय तदुदन्तं व्याख्याय सुश्रुताय तदनुजतनयं समर्पितवान्।

अन्येद्युः कञ्चन बालकमुरसि दधती वसुमती वल्लभमभिगता। तेन 'कुत्रत्योऽयम्' इति पृष्टा समभाषत—"राजन्, अतीतायां रात्रौ काचन दिव्यवनिता मत्पुरतः कुमारमेनं संस्थाप्य निद्रामुद्रितां मां विबोध्य विनीताब्रवीत्—'देवि, त्वन्मन्त्रिणो धर्मपालनन्दनस्य कामपालस्य वल्लभा यक्षकन्याऽहं तारावली नाम, नन्दिनी मणिभद्रस्य। यक्षेश्वरानुमत्या मदात्मजमेतं भवत्तनू-

अर्थपालोत्पत्तिकथा

जस्याम्भोनिधिवलयवेष्टितक्षोणीमण्डलेश्वरस्य भाविनो राजवाहनस्य परिचर्याकरणायानीतवत्यस्मि। त्वमेनं मनोजसन्निभमभिवर्धय' इति विस्मयविकसितनयनया मया सविनयं सत्कृता स्वक्षी यक्षी साप्यदृश्यतामयासीत्" इति।

कामपालस्य यक्षकन्यासङ्गमे विस्मयमानमानसो राजहंसो सुमित्रं मन्त्रिणमाहूय तदीयभ्रातृपुत्रमर्थपालं विधाय तस्मै सर्वं वार्तादिकं व्याख्यायादात्।

सोमदत्त-जन्म-कथा

ततः परस्मिन् दिवसे वामदेवान्तेवासी तदाश्रमवासी निर्भर्त्सितमारमूर्तिं कुसुमसुकुमारं कुमारमेकमवगमय्य नरपतिमवादीत्—"देव, विलोलालकं बालकं निजोत्सङ्गतले निधाय रुदतीं स्थविरामेकां विलोक्यावोचम्—'स्थविरे, का त्वम्, अयमर्भकः कस्य नयनानन्दकरः, कान्तारं किमर्थमागता, शोककारणं किम्' इति।

सा करयुगेन बाष्पजलमुन्मृज्य शोकहेतुमवोचत्—"द्विजात्मज, राजहंसमन्त्रिणः सितवर्मणः कनीयानात्मजः सत्यवर्मा तीर्थयात्राभिषेण देशमेनमागच्छत्। स कस्मिंश्चिदग्रहारे काली नाम कस्यचिद् भूसुरस्य नन्दिनीं विवाह्य तस्या अनप-

त्यतया गौरीं नाम तद्भगिनीं परिणीय तस्यामेकं तनयमलभत। काली सासूयमेकदा धात्र्या मया सह बालमेनमेकेन मिषेणानीय तटिन्यामेतस्यामक्षिपत्। करेणैकेन बालमुद्धृत्यापरेण प्लवमाना नदीवेगागतस्य कस्यचित्तरोः शाखामवलम्ब्य तत्र शिशुं निधाय नदीवेगेनोह्यमाना केनचित्तरुलग्नेन कालभोगिनाहमदंशि। मदवलम्बीभूतो भूरुहोऽयमस्मिन् देशे तीरमगमत्। गरलस्योद्दीपनतया मयि मृतायामरण्ये कश्चन शरण्यो नास्तीति मया शोच्यते' इति।

ततः सा धरणीतले न्यपतत्। दयाविष्टहृदयोऽहं मन्त्रबलेन विषव्यथामपनेतुमक्षमः समीपकुञ्जेष्वौषधिविशेषमन्विष्य प्रत्यागतो व्युत्क्रान्तजीवितां तां व्यलोकयम्।

तदनु तस्याः पावकसंस्कारं विरच्य बालमेनमगतिमादाय भवदमात्यतनयस्य भवानेवाभिरक्षितेति भवन्तमेनमनयम्" इति।

तन्निशम्य खिन्नमानसो नरपतिः सुमतये मन्त्रिणे सोमदत्तं नाम तदनुजतनयमर्पितवान्। सोऽपि सोदरमागतमिव मन्यमानो विशेषेण पुपोष।

एवं मिलितेन कुमारमण्डलेन सह बालकेलीरनुभवन्नधिरूढा-

नेकवाहनो राजवाहनोऽनुक्रमेण चौलोपनयनादिसंस्कारजातम-
लभत। ततः सकललिपिज्ञानं निखिलदेशीय-
भाषापाण्डित्यं षडङ्गसहितवेदसमुदायकोविदत्वं
काव्यनाटकाख्यानकाख्यायिकेतिहासचित्रकथा-
सहितपुराणगणनैपुण्यं धर्मशब्दज्योतिस्तर्कमी-
मांसादिसमस्तशास्त्रनिकरचातुर्यं कौटिल्यकामन्दकीयादिनीतिपट-
लकौशलं वीणाद्यशेषवाद्यदाक्ष्यं संगीतसाहित्यहारित्वं च तत्तदा-
चार्येभ्यः सम्यग्लब्ध्वा यौवनेन विलसन्तं कुमारनिकरं निरीक्ष्य
महीवल्लभः सः 'अहं शत्रुजनदुर्लभः' इति परमानन्दमविन्दत।

राजवाहनादिकुमाराणां विद्याभ्यासः

अथैकदा वामदेवः कुमारनिकरेण परिवेष्टितं राजानमानत-
शिरसं समभिगम्य तेन तां कृतां परिचर्यामङ्गीकृत्य कुमारचयं
गाढमालिङ्ग्य विहिताशीरभ्यभाषत—'भूवल्लभ,
भवदीयमनोरथफलमिव समृद्धलावण्यं तारुण्यं
नुतमित्रो भवत्पुत्रोऽनुभवति। सहचरसमेतस्य
नूनमेतस्य दिग्विजयारम्भसमय एषः। तदस्य सकलक्लेशसहस्य
राजवाहनस्य दिग्विजयप्रयाणं क्रियताम्' इति।

राजवाहनस्य दिग्विजयप्रयाणम्

कुमारा माराभिरामा रणाभियानेन यानेनाभ्युदयाशंसं
राजानमकार्षुः। तत्साचिव्यमितरेषां विधाय समुचितां

बुद्धिमुपदिश्य शुभे मुहूर्ते सपरिवारं कुमारं विजयाय विससर्ज ।

राजवाहनो मङ्गलसूचकं शुभशकुनं विलोकयन्देशं कञ्चिद्-तिक्रम्य विन्ध्याटवीमध्यमविशत् । तत्र कालायसकर्कशकायं यज्ञोपवीतेनानुमेयविप्रभावं व्यक्तकिरातप्रभावं लोचनपरुषं कमपि पुरुषं ददर्श ।

तेन विहितपूजनो राजवाहनोऽभाषत—'ननु मानव, घोरप्रचारे विन्ध्याटवीमध्ये भवानेकाकी किमिति निवसति । भवदंसोपनीतं यज्ञोपवीतं भूसुरभावं द्योतयति । हेतिहतिभिः किरातरीतिरनुमीयते । कथय किमेतत्' इति । 'तेजोमयोऽयं मानुषमात्रपौरुषो नूनं न भवति' इति मत्वा स पुरुषस्तद्वयस्यमुखान्नामजनने विज्ञाय तस्मै निजवृत्तान्तमकथयत्—"राजनन्दन, केचिदस्यामटव्यां बहवो ब्राह्मणब्रुवा निवसन्ति, तेषु कस्यचित्पुत्रो निन्दापात्रचारित्रो मातङ्गो नामाहं सह किरातबलेन जनपदं प्रविश्य ग्रामेषु धनिनः स्त्रीबालसहितानानीयाटव्यां बन्धने निधाय तेषां सकलधनमपहरन्नुद्धृत्य वीतदयो व्यचरम् । कदाचिदेकस्मिन्कान्तारे मदीयसहचरगणेन जिघांस्यमानं भूसुरमेकमवलोक्य दयायत्तचित्तोऽब्रवम्—'ननु पापाः, न हन्तव्यो ब्राह्मण' इति ।

राजवाहनस्य मातङ्गसमागमः

ते रोषारुणनयना मां बहुधा निरभर्त्सयन् । तेषां भाषण-पारुष्यमसहिष्णुरहमवनिसुररक्षणाय चिरं प्रयुध्य तैरभिहतो गतजीवितोऽभवम् ।

[ततः प्रेतपुरीमुपेत्य तत्र देहधारिभिः पुरुषैः परिवेष्टितं सभामध्ये रत्नखचितसिंहासनासीनं शमनं विलोक्य तस्मै दण्ड-प्रणाममकरवम् । सोऽपि मामवेक्ष्य चित्रगुप्तं नाम निजामात्य-माहूय तमवोचत्—'सचिव, नैषोऽमुष्य मृत्युसमयः । निन्दित-चरितोऽप्ययं महीसुरनिमित्तं गतजीवितोऽभूत् । इतः प्रभृति विगलितकल्मषस्यास्य पुण्यकर्मकरणे रुचिरुदेष्यति । पापिष्ठै-रनुभूयमानमत्र यातनाविशेषं विलोक्य पुनरपि पूर्वशरीरमनेन गम्यताम्' इति ।

चित्रगुप्तोऽपि पुण्यबुद्धिमुपदिश्य माममुञ्चत्] तदेव पूर्व-शरीरमहं प्राप्तो महाटवीमध्ये शीतलोपचारं रचयता महीसुरेण परीक्ष्यमाणः शिलायां शायितः क्षणमतिष्ठम् ।

तदनु विदितोदन्तो मदीयवंशबन्धुगणः सहसागत्य मन्दि-रमानीय मामपक्रान्तव्रणमकरोत् । द्विजन्मा कृतज्ञो मह्यमक्षर-शिक्षां विधाय कल्मषक्षयकारणं सदाचारमुपदिश्य ज्ञानेक्षण-

गम्यमानस्य शशिखण्डशेखरस्य पूजाविधानमभिधाय पूजां मत्कृतामङ्गीकृत्य निरगात् ।

तदारभ्याहमस्मिन् कानने दूरीकृतकलङ्को वसामि । देव, भवते विज्ञापनीयं रहस्यं किञ्चिदस्ति । आगम्यताम्" इति ।

स वयस्यगणादपनीय रहसि पुनरेनमभाषत—"राजन्, अतीते निशान्ते गौरीपतिः स्वप्नसन्निहितो निद्रामुद्रितलोचनं विबोध्य प्रसन्नवदनकान्तिः प्रश्रयानतं मामवोचत्—'मातङ्ग, दण्डकारण्यान्तरालगामिन्यास्तटिन्यास्तीरभूमौ सिद्धसाध्याराध्यमानस्य स्फटिकलिङ्गस्य पश्चाद् विधेराननमिव किमपि बिलं विद्यते । तत्प्रविश्य तत्र निक्षिप्तं ताम्रशासनं शासनं विधातुरिव समादाय विधिं तदुपदिष्टं दिष्टविजयमिव विधाय पाताललोकाधीश्वरेण भवता भवितव्यम् । भवत्साहाय्यकरो राजकुमारोऽद्य श्वो वा समागमिष्यति' इति । तदादेशानुगुणमेव भवदागमनमभूत् । साधनाभिलाषिणो मम रचय साहाय्यम्" इति ।

'तथा'—इति राजवाहनः साकं मातङ्गेन नमितोत्तमाङ्गेन विहायार्धरात्रे निद्रापरतन्त्रं मित्रगणं वनान्तरमवाप । तदनु तदनुचराः कल्ये साकल्येन राजकुमारमनवलोकयन्त एतदन्वे-

षणमनीषया देशान्तरं चरिष्णवो निश्चितपुनःसङ्केतस्थानाः परस्परं वियुज्य ययुः ।

लोकैकवीरेण कुमारेण रक्ष्यमाणः सन्तुष्टान्तरङ्गो मातङ्गोऽपि बिलं शशिशेखरकथिताभिज्ञानपरिज्ञातं निःशङ्कं प्रविश्य गृहीतताम्रशासनो रसातलं पथा तेनैवोपेत्य तत्र कस्यचित् पत्तनस्य निकटे हविषा होमं विरच्य समिदाज्यसमुज्ज्वलिते ज्वलने पुण्यगेहं देहं मन्त्रपूर्वकमाहुतीकृत्य दिव्यां तनुमलभत ।

तदनु सकललोकललनाकुलललामभूतकन्यका काचन शनैरागत्यावनिसुरोत्तमाय मणिमेकमुज्ज्वलाकारमुपायनीकृत्य तेन 'का त्वम्' इति पृष्टा सोत्कण्ठा कलकण्ठस्वनेन मन्दं मन्दमुदञ्जलिरभाषत—

"भूसुरोत्तम, अहमसुरोत्तमनन्दिनी कालिन्दी नाम । मम पितास्य लोकस्य शासिता विष्णुना समरे यमनगरातिथिरकारि । तद्वियोगशोकसागरमग्नां मामवेक्ष्य कोऽपि कारुणिकः सिद्धतापसोऽभाषत—

'बाले, कश्चिद्दिव्यदेहधारी मानवो नवो वल्लभस्तव भूत्वा सकलं रसातलं पालयिष्यति' इति । तदादेशं निशम्य घनशब्दो-

न्मुखी चातकी वर्षागमनमिव तवालोकनकाङ्क्षिणी चिरमतिष्ठम्। मन्मनोरथफलायमानं भवदागमनमवगम्य मद्राज्यावलम्बभूतामात्यानुमत्या मदनकृतसारथ्येन मनसा भवन्तमागच्छम्। लोकस्यास्य राजलक्ष्मीमङ्गीकृत्य मां तत्सपत्नीं करोतु भवान्" इति।

मातङ्गोऽपि राजवाहनानुमत्या तां तरुणीं परिणीय दिव्याङ्गनालाभेन हृष्टतरो रसातलराज्यमुररीकृत्य परमानन्दमाससाद।

राजवाहनः कालिन्दीदत्तं क्षुत्पिपासादिक्लेशनाशनं मणिं साहाय्यकरणसन्तुष्टान्मातङ्गाल्लब्ध्वा बिलपथेन तेन निर्ययौ। तत्र च मित्रगणमनवलोक्य भुवं बभ्राम।

-सोमदत्तप्राप्तिः

भ्रमंश्च विशालोपशल्ये कमप्याक्रीडमासाद्य तत्र विशश्रमिषुरान्दोलिकारूढं रमणीसहितमाप्तजनपरिवृतमुद्याने समागतमेकं पुरुषमपश्यत्। सोऽपि 'मम स्वामी सोमकुलावतंसो विशुद्धयशोनिधी राजवाहन एषः। महाभाग्यतयाकाण्ड एवास्य पादमूलं गतवानस्मि। सम्प्रति महान्नयनोत्सवो जातः' इति ससम्भ्रममान्दोलिकाया अवतीर्य चरणकमलयुगलं मौलिना पस्पर्श।

प्रमोदाश्रुपूर्णो राजा तं गाढमालिङ्ग्य 'अये सौम्य सोमदत्त !' इति व्याजहार। ततो मनुजनाथेन सप्रणयमभाणि—'सखे, कालमेतावन्तं देशे कस्मिन्, प्रकारेण केनास्थायि भवता, सम्प्रति कुत्र गम्यते, तरुणी केयम्, एष परिजनः सम्पादितः कथम्, कथय' इति।

सोऽपि सविनयमात्मीयप्रचारप्रकारमब्रोचत्—

"देव, भवच्चरणकमलसेवाभिलाषीभूतोऽहं भ्रमन्नेकस्यां वनावनौ पिपासाकुलो लतापरिवृतं शीतलं नदसलिलं पिबन्नुज्ज्वलाकारं रत्नं तत्रैकमद्राक्षम्। तदादाय गत्वा

सोमदत्तकृतं स्ववृत्तान्त-वर्णनम्

कञ्चनाध्वानमम्बरमणेरत्युष्णतया गन्तुमक्षमो वनेऽस्मिन्नेव किमपि देवतायतनं प्रविष्टो दीनाननं बहुतनयसमेतं स्थविरमहीसुरमेकमवलोक्य कुशलमुदितदयोऽहमपृच्छम्।

अवोचदग्रजन्मा—'महाभाग, सुतानेतान् मातृहीनाननेकैरुपायैः रक्षन्निदानीमस्मिन् कुदेशे भैक्ष्यं सम्पाद्य ददेतेभ्यो वसामि शिवालयेऽस्मिन्' इति।

'भूदेव, एतत्कटकाधिपती राजा कस्य देशस्य, किन्नामधेयः, किमत्रागमनकारणमस्य' इति पृष्टोऽभाषत महीसुरः—'सौम्य,

मत्तकालो नाम लाटेश्वरो देशस्यास्य पालयितुर्वीरकेतोस्तनयां वामलोचनां नाम तरुणीरत्नमसमानलावण्यं श्रावं श्रावमवधूतदुहितृप्रार्थनस्य तस्य नगरीमरौत्सीत्। वीरकेतुरपि भीतो महदुपायनमिव तनयां मत्तकालायादात्। तरुणीलाभहृष्टचेता लाटपतिः 'परिणेया निजपुर एव' इति निश्चित्य गच्छन्निजदेशं प्रति सम्प्रति मृगयादरेणात्र वने सैन्यावासमकारयत्।

कन्यासारेण नियुक्तो मानपालो नाम वीरकेतुमन्त्री मानधनश्चतुरङ्गबलसमन्वितोऽन्यत्र रचितशिविरस्तं निजनाथावमानखिन्नमानसोऽन्तर्बिभेद' इति।

विप्रोऽसौ बहुतनयो विद्वान् निर्धनः स्थविरश्च दानयोग्य इति तस्मै करुणापूर्णमना रत्नमदाम्। परमाह्लादविकसिताननोऽभिहितानेकाशीः कुत्रचिदग्रजन्मा जगाम। अध्वश्रमखिन्नेन मया तत्र निरवेशि निद्रासुखम्। तदनु पश्चान्निगडितबाहुयुगलः स भूसुरः कशाघातचिह्नितगात्रोऽनेकनैस्त्रिंशिकानुयातोऽभ्येत्य माम् 'असौ दस्युः' इत्यदर्शयत्।

परित्यक्तभूसुरा राजभटा रत्नावाप्तिप्रकारं मदुक्तमनाकर्ण्य भयरहितं मां गाढं नियम्य रज्जुभिरानीय कारागारम् 'एते तव

सखायः' इति निगडितान् कांश्चिन्निर्दिष्टवन्तो मामपि निगडितचरणयुगलमकार्षुः । किङ्कर्तव्यतामूढेन निराशक्लेशानुभवेनावाचि मया—'ननु पुरुषा वीर्यपरुषाः, निमित्तेन केन निर्विशथ कारावासदुःखं दुस्तरम् । यूयं वयस्या इति निर्दिष्टमेतैः, किमिदम्' इति ।

चोरवीराः पुनरवोचन्—'महाभाग, वीरकेतुमन्त्रिणो मानपालस्य किङ्करा वयम् । तदाज्ञया लाटेश्वरमारणाय रात्रौ सुरुङ्गाद्वारेण तदगारं प्रविश्य तत्र राजाभावेन विषण्णा बहुधनमाहृत्य महाटवीं प्राविशाम । अपरेद्युश्च पदान्वेषिणो राजानुचरा बहवोऽभ्येत्य धृतधनचयानस्मान् परितः परिवृत्य दृढतरं बद्ध्वा निकटमानीय समस्तवस्तुशोधनवेलायामेकस्यानर्घ्यरत्नस्याभावेनास्मद्वधाय माणिक्यादानादस्मान् किलाशृङ्खलयन्' इति ।

श्रुतरत्नावलोकनस्थानोऽहम् 'इदं तदेव माणिक्यम्' इति निश्चित्य भूदेवदाननिमित्तां दुरवस्थामात्मनो जन्म नामधेयं युष्मदन्वेषणपर्यटनप्रकारं चाभाष्य समयोचितैः संलापैर्मैत्रीमकार्षम् । ततोऽर्धरात्रे तेषां मम च शृङ्खलाबन्धनं निर्भिद्य तैरनुगम्यमानो निद्रितस्य द्वाःस्थगणस्यायुधजालमादाय पुररक्षान् पुरतोऽभिमुखागतान् पटुपराक्रमलीलयाभिद्राव्य मानपालशिबिरं प्रावि-

शम्। मानपालो निजकिङ्करेभ्यो मम कुलाभिमानवृत्तान्तं तत्कालीनं विक्रमं च निशम्य मामार्चयत्।

परेद्युर्मत्तकालेन प्रेषिताः केचन पुरुषा मानपालमुपेत्य 'मन्त्रिन्, मदीयराजमन्दिरे सुरुङ्गया बहुधनमपहृत्य चोरवीरा भवदीयं कटकं प्राविशन्। तानर्पय। नो चेन्महाननर्थः सम्भविष्यति' इति क्रूरतरं वाक्यमब्रुवन्। तदाकर्ण्य रोषारुणितनेत्रो मन्त्री 'लाटपतिः कः, तेन मैत्री का, पुनरस्य वराकस्य सेवया किं लभ्यम्' इति तान्निरभर्त्सयत्, ते च मानपालेनोक्तं विप्रलापं मत्तकालाय तथैवाकथयन्। कुपितोऽपि लाटपतिर्दोर्वीर्यगर्वेणाल्पसैनिकसमेतो योद्धुमभ्यगात्। पूर्वमेव कृतरणनिश्चयो मानी मानपालः सन्नद्धयोधो युद्धकामो भूत्वा निःशङ्कं निरगात्। अहमपि युद्धसन्नद्धो मदीयबलविश्वासेन रिपूद्धरणोद्युक्तं मन्त्रिणमन्वगाम्। परस्परमत्सरेण तुमुलसङ्गरकरमुभयसैन्यमतिक्रम्य समुल्लसद्भुजाटोपेन बाणवर्षं तदङ्गे विमुञ्चन्नरातीन् प्राहरम्।

ततोऽतिरयतुरङ्गमं मद्रथं तन्निकटं नीत्वा शीघ्रलङ्घनोपेततदीयरथोऽहमरातेः शिरःकर्तनमकार्षम्। तस्मिन् पतिते परमानन्दसम्भृतो मन्त्री ममानेकविधां सम्भावनामकार्षीत्।

मानपालप्रेषितात् तदनुचरादेनमखिलमुदन्तजातमाकर्ण्य सन्तुष्टमना राजाभ्युद्गतो मदीयपराक्रमे विस्मयमानः समहोत्सवममात्यबान्धवानुमत्या शुभदिने निजतनयां मह्यमदात्। ततो यौवराज्याभिषिक्तोऽहमनुदिनमाराधितमहीपालचित्तो वामलोचनयानया सह नानाविधं सौख्यमनुभवन् भवद्विरहवेदनाशल्यसुलभवैकल्यहृदयः सिद्धादेशेन सुहृज्जनावलोकनफलं प्रदेशं महाकालनिवासिनः परमेश्वरस्याराधनायाद्य पत्नीसमेतः समागतोऽस्मि। भक्तवत्सलस्य गौरीपतेः कारुण्येन त्वत्पदारविन्दसन्दर्शनानन्दसन्दोहो मया लब्धः" इति।

तन्निशम्याभिनन्दितपराक्रमो राजवाहनस्तन्निरपराधदण्डे दैवमुपालभ्य तस्मै क्रमेणात्मचरितं कथयामास। तस्मिन्नवसरे पुरतः पुष्पोद्भवं विलोक्य 'सौम्य सोमदत्त, अयं स पुष्पोद्भवः' इति तस्मै तं दर्शयामास।

तौ च चिरविरहदुःखं विसृज्यान्योन्यालिङ्गनसुखमन्वभूताम्। ततस्तस्यैव महीरुहस्य च्छायायामुपविश्य राजा सादरहासमभाषत—'वयस्य, भूसुरकार्यं करिष्णुरहं मित्रगणो विदितार्थः सर्वथान्तरायं करिष्यतीति निद्रितान् भवतः परित्यज्य निरगाम्। तदनु प्रबुद्धो वय-

पुष्पोद्भवकृतं वृत्तान्त-कथनम्

स्यवर्गः किमिति निश्चित्य मदन्वेषणाय कुत्र गतवान्। भवानेकाकी कुत्र गतः' इति। सोऽपि ललाटतटचुम्बदञ्जलिपुटः सविनयमलपत्—

"देव, महीसुरोपकारायैव देवो गतवानिति निश्चित्यापि देवेन गन्तव्यं देशं निर्णेतुमशक्नुवानो मित्रगणः परस्परं वियुज्य दिक्षु देवमन्वेष्टुमगच्छत्।

अहमपि देवस्यान्वेषणाय महीमटन् कदाचिदम्बरमध्यगतस्याम्बरमणेः किरणमसहिष्णुरेकस्य गिरितटमहीरुहस्य प्रच्छायशीतले तले क्षणमुपाविशम्। मम पुरोभागे दिनमध्यसङ्कुचितसर्वावयवां कूर्माकृतिं मानुपच्छायां निरीक्ष्योन्मुखो गगनतलान्महारयेण पतन्तं पुरुषं कञ्चिदन्तराल एव दयोपनतहृदयोऽहमवलम्ब्य शनैरवनितले निक्षिप्य दूरापातवीतसंज्ञं तं शिशिरोपचारेण विबोध्य शोकातिरेकेणोद्गतबाष्पलोचनं तं भृगुपतनकारणमपृच्छम्।

सोऽपि कररुहैरश्रुकणानपनयन्नभाषत—'सौम्य, मगधाधिनाथामात्यस्य पद्मोद्भवस्यात्मसम्भवो रत्नोद्भवो नामाहम्। वाणिज्यरूपेण कालयवनद्वीपमुपेत्य कामपि वणिक्कन्यकां परिणीय तया सह प्रत्यागच्छन्नम्बुधौ तीरस्यानतिदूर एव प्रवह-

णस्य भग्नतया सर्वेषु निमग्नेषु कथङ्कथमपि दैवानुकूल्येन तीरभूमिमभिगम्य निजाङ्गनावियोगदुःखार्णवे प्लवमानः कस्यापि सिद्धतापसस्यादेशादरेण षोडश हायनानि कथञ्चिन्नीत्वा दुःखस्य पारम् अनवेक्षमाणः गिरिपतनमकार्षम्' इति ।

तस्मिन्नेवावसरे किमपि नारीकूजितमश्रावि—'न खलु समुचितमिदं यत्सिद्धादिष्टे पतितनयमिलने विरहमसहिष्णुर्वैश्वानरं विशसि' इति ।

तन्निशम्य मनोविदितजनकभावं तमवादिषम्—'तात, भवते विज्ञापनीयानि बहूनि सन्ति । भवतु । पश्चादखिलमाख्यातव्यम् । अधुना नारीकूजितमनुपेक्षणीयं मया । क्षणमात्रमत्र भवता स्थीयताम्' इति ।

तदनु सोऽहं त्वरया किञ्चिदन्तरमगमम् । तत्र पुरतो भयङ्करज्वालाकुलहुतभुगवगाहनसाहसिकां मुकुलिताञ्जलिपुटां वनितां काञ्चिदवलोक्य ससम्भ्रममनलादपनीय कूजन्त्या वृद्धया सह मत्पितुरभ्यर्णमभिगमय्य स्थविरामवोचम्—'वृद्धे, भवत्यौ कुत्रत्ये ? कान्तारे निमित्तेन केन दुरवस्थानुभूयते ? कथ्यताम्' इति ।

सा सगद्गदमवादीत्—'पुत्र, कालयवनद्वीपे कालगुप्तनाम्नो वणिजः कस्यचिदेषा सुता सुवृत्ता नाम रत्नोद्भवेन निजकान्तेनागच्छन्ती जलधौ मग्ने प्रवहणे निजधात्र्या मया सह फलकमेकमवलम्ब्य दैवयोगेन कूलमुपेताऽसन्नप्रसवसमया कस्याञ्चिदटव्यामात्मजमसूत। मम तु मन्दभाग्यतया बाले वनमातङ्गेन गृहीते मद्द्वितीया परिभ्रमन्ती 'षोडशवर्षानन्तरं भर्तृपुत्रसङ्गमो भविष्यति' इति सिद्धवाक्यविश्वासादेकस्मिन् पुण्याश्रमे तावन्तं समयं नीत्वा शोकमपारं सोढुमक्षमा समुज्ज्वलिते वैश्वानरे शरीरमाहुतीकर्तुमुद्युक्तासीत्' इति।

तदाकर्ण्य निजजननीं ज्ञात्वा तामहं दण्डवत्प्रणम्य तस्यै मदुदन्तमखिलमाख्याय धात्रीभाषणफुल्लवदनं विस्मयविकसिताक्षं जनकमदर्शयम्। पितरौ तौ साभिज्ञानमन्योन्यं ज्ञात्वा मुदितान्तरात्मानौ विनीतं मामानन्दाश्रुवर्षेणाभिषिच्य गाढमाश्लिष्य शिरस्युपाघ्राय कस्याञ्चिन्महीरुहच्छायायामुपाविशताम्।

'कथं निवसति महीवल्लभो राजहंसः' इति जनकेन पृष्टोऽहं तस्य राज्यच्युतिं त्वदीयजननं सकलकुमारावाप्तिं तव दिग्विजयारम्भं भवतो मातङ्गानुयानमस्माकं युष्मदन्वेषणकारणं सकल-

मभ्यधाम् । ततस्तौ कस्यचिदाश्रमे मुनेरस्थापयम् [ततो देवस्यान्वेषणपरायणोऽहमखिलकार्यनिमित्तं वित्तं निश्चित्य विन्ध्यवनमध्ये पुरातनपत्तनस्थानान्युपेत्य विविधनिधिसूचकानां महीरुहाणामधोनिक्षिप्तान् वसुपूर्णान् कलशान् सिद्धाञ्जनेन ज्ञात्वा खननसाधनैरुत्पाद्य दीनारानसंख्यान् राशीकृत्य तत्कालागतमनतिदूरे निवेशितं वणिक्कटकं कश्चिदस्येत्य तत्र बलिनो बलीवर्दान् गोणीश्च क्रीत्वान्यद्रव्यमिषेण वसु तद्गोणीसञ्चितं तैरुह्यमानं शनैः कटकमनयम्]

तदधिकारिणा चन्द्रपालेन केनचिद्वणिक्पुत्रेण विरचितसौहृदोऽहममुनैव साकमुज्जयिनीमुपाविशम् । मत्पितरावपि तां पुरीमभिगमय्य सकलगुणनिलयेन बन्धुपालनाम्ना चन्द्रपालजनकेन नीयमानो मालवनाथदर्शनं विधाय तदनुमत्या गूढवसतिमकरवम् । ततः काननभूमिषु भवन्तमन्वेष्टुमुद्युक्तं मां परममित्रं बन्धुपालो निशम्यावदत्—'सकलं धरणितलमपारमन्वेष्टुमक्षमो भवान् मनोग्लानिं विहाय तूष्णीं तिष्ठतु । भवन्नायकालोकनकारणं शुभशकुनं निरीक्ष्य कथयिष्यामि' इति ।

तल्लपितामृताश्वासितहृदयोऽहमनुदिनं तदुपकण्ठवर्ती कदाचिदिन्दुमुखीं नयनचन्द्रिकां बालचन्द्रिकां नाम तरुणीरत्नं

वणिङ्मन्दिरलक्ष्मीं मूर्तामिवावलोक्य लतान्तबाण—बाणलक्ष्यतामयासिषम् ।

चतुरगूढचेष्टाभिरस्या मनोऽनुरागं सम्यग्ज्ञात्वा सुखसङ्गमोपायमचिन्तयम् । अन्यदा बन्धुपालः शकुनैर्भवद्गतिं प्रेक्षिष्यमाणः पुरोपान्तविहारवनं मया सहोपेत्य कस्मिंश्चिन्महीरुहे शकुन्तवचनानि शृण्वन्नतिष्ठत् ।

अहमुत्कलिकाविनोदपरायणो वनान्तरे परिभ्रमन् सरोवरतीरे चिन्ताक्रान्तचित्तां दीनवदनां मन्मनोरथैकभूमिं बालचन्द्रिकां व्यलोकयम् ।

तदुपकण्ठमुपेत्यावोचम्—'सुमुखि, तव मुखारविन्दस्य दैन्यकारणं कथय' इति ।

सा शनैरभाषत—'सौम्य, मानसारो मालवाधीश्वरो वार्धकस्य प्रबलतया निजनन्दनं दर्पसारमुज्जयिन्यामभ्यपिञ्चत् । स कुमारः सप्तसागरपर्यन्तं महीमण्डलं पालयिष्यन् निजपैतृष्वस्रेयावुद्दण्डकर्माणौ चण्डवर्मदारुवर्माणौ धरणीभरणे नियुज्य तपश्चरणाय राजराजगिरिमभ्यगात् ।

राज्यं सर्वमसपत्नं शासति चण्डवर्मणि दारुवर्मा मातुलाग्र-

जन्मनोः शासनमतिक्रम्य पारदार्यपरद्रव्यापहरणादि दुष्कर्म कुर्वाणो मामेकदा विलोक्य बलात्कारेण रन्तुमुद्युङ्क्ते, तच्चिन्तया दैन्यमगच्छम्' इति।

इति तस्या मनोगतम्, रागोद्रेकं निशम्य बाष्पपूर्णलोचनां तामाश्वास्य दारुवर्मणो मरणोपायश्च विचार्य वल्लभामवोचम्—'तरुणि, भवदभिलापिणं दुष्टहृदयमेनं निहन्तुं मृदुरुपायः कश्चिन्मया चिन्त्यते' इति।

सापि किञ्चिदुत्फुल्लसरसिजानना मामब्रवीत्—'सुभग, क्रूरकर्माणं दारुवर्माणं भवानेव हन्तुमर्हति। तस्मिन् हते सर्वथा युष्मन्मनोरथः फलिष्यति। एवं क्रियताम्। भवदुक्तं सर्वमहमपि तथा करिष्ये' इति मामसकृद्विवृत्तवदना विलोकयन्ती मन्दं मन्दमगारमगात्। अहमपि बन्धुपालमुपेत्य शकुनज्ञात्तस्मात् 'त्रिंशद्दिवसानन्तरमेव भवत्सङ्गः सम्भविष्यति' इत्यश्रृणवम्। तदनु मदनुगम्यमानो बन्धुपालो निजावासं प्रविश्य मामपि निलयाय विससर्ज।

मन्मायोपायवागुरापाशलग्नेन दारुवर्मणा रतिमन्दिरे रन्तुं समाहूता बालचन्द्रिका तं गमिष्यन्ती दूतिकां मन्निकटमभिप्रेषितवती। अहमपि वनितायोग्यं मण्डनजातं निपुणतया

तत्तत्स्थानेषु निक्षिप्य सम्यगङ्गीकृतमनोज्ञवेषो वल्लभया तया सह तदागारद्वारोपान्तमगच्छम् ।

द्वाःस्थकथितास्मदागमनेन तेन द्वारोपान्तनिवारिताशेष-परिवारेण मदन्विता बालचन्द्रिका सङ्केतागारमनीयत ।

विवेकशून्यमतिरसौ मह्यं तमिस्रासम्यगनवलोकितपुंभावाय मनोरमस्त्रीवेषाय च चामीकरमणिमयमण्डनानि सूक्ष्माणि चित्रवस्त्राणि कस्तूरिकामिलितं हरिचन्दनं कर्पूरसहितं ताम्बूलं सुरभीणि कुसुमानीत्यादिवस्तुजातं समर्प्य मुहूर्तद्वयमात्रं हासवचनैः संलपन्नतिष्ठत् ।

रोषारुणितोऽहमेनं पर्यङ्कतलान्निःशङ्को निपात्य मुष्टिजानु-पादघातैः प्राहरम् । नियुद्धरभसविकलमलङ्कारं पूर्ववन्मेलयित्वा भयकम्पितां नताङ्गीमुपलालयन् मन्दिराङ्गणमुपेतः साध्वसकम्पित इवोच्चैरकूजमहम्—'हा, बालचन्द्रिकाधिष्ठितेन घोराकारेण यक्षेण दारुवर्मा निहन्यते । सहसा समागच्छत । पश्यतेमम्' इति ।

तदाकर्ण्य मिलिता जनाः समुद्यद्बाष्पा हाहानिनादेन दिशो बधिरयन्तः 'बालचन्द्रिकामधिष्ठितं यक्षं बलवन्तं शृण्वन्नपि दारु-वर्मा मदान्धस्तामेवायाचत । तदसौ स्वकीयेन कर्मणा निहतः

'किं तस्य विलापेन' इति मिथो लपन्तः प्राविशन्। कोलाहले तस्मिंश्चञ्चललोचनया सह नैपुण्येन सहसा निर्गतो निजावासमगाम्।

ततो गतेषु कतिपयदिनेषु पौरजनसमक्षं सिद्धादेशप्रकारेण विवाह्य तामिन्दुमुखीं बन्धुपालशकुननिर्दिष्टे दिवसेऽस्मिन्निर्गत्य पुराद्बहिर्वर्तमानो नेत्रोत्सवकारि भवदवलोकनसुखमप्यनुभवामि" इति।

एवं मित्रवृत्तान्तं निशम्याम्लानमानसो राजवाहनः स्वस्य च सोमदत्तस्य च वृत्तान्तमस्मै निवेद्य सोमदत्तम् 'महाकालेश्वराराधनानन्तरं भवद्वल्लभां सपरिवारां निजकटकं प्रापय्यागच्छ' इति नियुज्य पुष्पोद्भवेन सेव्यमानो भूस्वर्गायमानमवन्तिकापुरं विवेश। तत्र

राजवाहनस्यावन्तिकापुरीगमनम्

'अयं मम स्वामिकुमारः' इति बन्धुपालादये बन्धुजनाय कथयित्वा तेन राजवाहनाय बहुविधां सपर्यां कारयन् सकलकलाकुशलो महीसुरवर इति पुरि प्रकटयन् पुष्पोद्भवोऽमुष्य राज्ञो मज्जनभोजनादिकमनुदिनं स्वमन्दिरे कारयामास।

अथ सहकारकिसलयमकरन्दास्वादनरक्तकण्ठानां मधुकरकलकण्ठानां काकलीकलकलेन दिक्चक्रं वाचालयन् माकन्द

सिन्दुवाररक्ताशोककिंशुकतिलकेषु कलिकामुपपादयन्, मदनमहोत्सवाय रसिकमनांसि समुल्लासयन्, वसन्तसमयः समाजगाम।

तस्मिन्नतिरमणीये कालेऽवन्तिसुन्दरी नाम मानसारनन्दिनी प्रियवयस्यया बालचन्द्रिकया सह नगरोपान्तरम्योद्याने विहारोत्कण्ठया पौरसुन्दरीसमवायसमन्विता कस्यचिच्चूतपोतकस्य छायाशीतले सैकततले परिमलद्रव्यनिकरेण मनोभवमर्चयन्ती रेमे।

तत्र रतिप्रतिकृतिमवन्तिसुन्दरीं द्रष्टुकामः काम इव वसन्तसहायः पुष्पोद्भवसमन्वितो राजवाहनस्तदुपवनं प्रविश्य तत्र तत्र रसालतरुषु कोकिलकीरालिकुलमधुकराणामालापान् श्रावं श्रावममन्दलीलया ललनासमीपमवाप।

बालचन्द्रिकया 'निःशङ्कमित आगम्यताम्' इति हस्तसंज्ञया समाहूतो निजतेजोनिर्जितपुरुहूतो राजवाहनः कृशोदर्या अवन्तिसुन्दर्या अन्तिकं समाजगाम।

सा मूर्तिमतीव लक्ष्मीर्मालवेशकन्यका मूर्तिमन्तं मन्मथमिव तमालोक्य मन्दमारुतान्दोलिता लतेव मदनावेशवती चकम्पे।

सा मनसीत्थमचिन्तयत्—'अनन्यसाधारणसौन्दर्येणानेन

कस्यां पुरि भाग्यवतीनां तरुणीनां लोचनोत्सवः क्रियते । किं करोमि । कथमयं ज्ञातव्यः' इति ।

ततो बालचन्द्रिका तयोरन्तरङ्गवृत्तिं भावविवेकैर्ज्ञात्वा लोकसाधारणैर्वाक्यैरभापत—'भर्तृदारिके, अयं सकलकलाप्रवीणो देवतासान्निध्यकरण आहवनिपुणो भूसुरकुमारो मणिमन्त्रौपधिज्ञः परिचर्याहों भवत्या पूज्यताम्' इति ।

तदाकर्ण्य निजमनोरथमनुवदन्त्या बालचन्द्रिकया सन्तुष्टान्तरङ्गा तरङ्गावली मन्दानिलेनेव सङ्कल्पजेनाकुलीकृता राजकन्या जितमारं कुमारं समुचितासनासीनं विधाय पूजां तस्मै कारयामास । राजवाहनोऽप्येवमचिन्तयत्—'नूनमेषा पूर्वजन्मनि मे जाया यज्ञवती । नो चेदेतस्यामेवंविधोऽनुरागो मन्मनसि न जायेत । शापावसानसमये तपोनिधिदत्तं जातिस्मरत्वमावयोः समानमेव ।'

तस्मिन्नेव समये कोऽपि मनोरमो राजहंसः केलीविधित्सया तदुपकण्ठमगमत् ।

तस्मिन्नवसरे मालवेन्द्रमहिषी परिजनपरिवृता दुहितृकेलीविलोकनाय तं देशमवाप । बालचन्द्रिका तु तां दूरतो विलोक्य ससम्भ्रमं रहस्यनिर्भेदभिया हस्तसंज्ञया पुष्पोद्भवसेव्यमानं राज-

वाहनं वृक्षवाटिकान्तरितगात्रमकरोत् । सा मानसारमहिषी सखीसमेताया दुहितुर्नानाविधां विहारलीलामनुभवन्ती क्षणं स्थित्वा दुहित्रा समेता निजागारगमनायोद्युक्ता बभूव । मातरमनुगच्छन्ती अवन्तिसुन्दरी 'राजहंसकुलतिलक, विहारवाञ्छया केलिवने मदन्तिकमागतं भवन्तमकाण्ड एव विसृज्य मया समुचितमिति जनन्यनुगमनं क्रियते—तदनेन भवन्मनोरागोऽन्यथा मा भूत्' इति मरालमिव कुमारमुद्दिश्य समुचितालापकलापं वदन्ती पुनः पुनः परिवृत्तदीननयना वदनं विलोकयन्ती निजमन्दिरमगात् । राजवाहनोऽपि यत्र हृदयवल्लभावलोकनसुखमलभत तदुद्यानं विरहविनोदाय पुष्पोद्भवसमन्वितो जगाम ।

तस्मिन्नवसरे धरणीसुर एकः सूक्ष्मचित्रनिवसनः स्फुरन्मणिकुण्डलमण्डितो मुण्डितमस्तकमानवसमेतश्चतुरवेषमनोरमो यदृच्छया समागतः समन्ततोऽभ्युल्लसत्तेजोमण्डलं राजवाहनमाशीर्वादपूर्वकं ददर्श । राजा सादरम् 'को भवान्, कस्यां विद्यायां निपुणः' इति तं पप्रच्छ । स च विद्येश्वरनामधेयोऽहमैन्द्रजालिकविद्याकोविदो विविधदेशेषु राजमनोरञ्जनाय भ्रमन्नुज्जयिनीमद्यागतोस्मि' इति शशंस । पुष्पोद्भवश्च निजकार्यकरणं तर्कयन्ने-

राजवाहनस्य विद्येश्वरैन्द्रजालिकेन समागमः

नमादरेण बभाषे—'ननु सतां सख्यस्याभाषणपूर्वतया चिरं रुचिरभाषणो भवानस्माकं प्रियवयस्यो जातः। सुहृदामकथ्यं च किमस्ति। केलीवनेऽस्मिन् वसन्तमहोत्सवायागताया मालवेन्द्र-सुताया राजनन्दनस्यास्य चाकस्मिकदर्शनेऽन्योन्यानुरागातिरेकः समजायत। सततसम्भोगसिद्ध्युपायाभावेनासावीदृशीमवस्थामनु-भवति' इति। विद्येश्वरो लज्जाभिरामं राजकुमारमुखमभिवीक्ष्य विरचितमन्दहासो व्याजहार—'देव, भवदनुचरे मयि तिष्ठति तव कार्यमसाध्यं किमस्ति। अहमिन्द्रजालविद्यया मालवेन्द्र मोहयन् पौरजनसमक्षमेव तत्तनयापरिणयं रचयित्वा कन्यान्तःपुर-प्रवेशं कारयिष्यामीति वृत्तान्त एष राजकन्यकायै सखीमुखेन पूर्वमेव कथयितव्यः' इति। सन्तुष्टमना महीपतिरनिमित्तं मित्रं तं विद्येश्वरं सबहुमानं विससर्ज।

अथ राजवाहनो विद्येश्वरस्य क्रियापाटवेन फलितमिव मनोरथं मन्यमानः पुष्पोद्भवेन सह स्वमन्दिरमुपेत्य सादरं बाल-चन्द्रिकामुखेन निजवल्लभायै महीसुरक्रियमाणं सङ्गमोपायं वेद-यित्वा कौतुकाकृष्टहृदयः 'कथमिमां क्षपां क्षप-यामि' इत्यतिष्ठत्। परेद्युः प्रभाते विद्येश्वरो रसभावरीतिगतिचतुरस्तादृशेन महता निजपरि-जनेन सह राजभवनद्वारान्तिकमुपेत्य दौवारिकनिवेदितनिज-

राजवाहनावन्ति-सुन्दर्योः परिणयः

वृत्तान्तः सहसोपगम्य सप्रणामम् 'ऐन्द्रजालिकः समागतः' इति द्वाःस्थैर्विज्ञापितेन तद्दर्शनकुतूहलाविष्टेन समुत्सुकावरोधसहितेन मालवेन्द्रेण समाहूयमानो विद्येश्वरः कक्षान्तरं प्रविश्य सविनयमाशिषं दत्त्वा तदनुज्ञातः परिजनताड्यमानेषु वाद्येषु नदत्सु, समधिकरागरञ्जितसामाजिकमनोवृत्तिषु पिच्छिकाभ्रमणेषु, स परिवारं परिवृत्तं भ्रामयन् मुकुलितनयनः क्षणमतिष्ठत् । तदनु विषमं विषमुल्बणं वमन्तः फणालङ्करणा भोगिनो भयं जनयन्तो निश्चेरुः ।

गृध्राश्च बहवस्तुण्डैरहिपतीनादाय दिवि समचरन् । ततोऽग्रजन्मा नरसिंहस्य हिरण्यकशिपोर्दैत्येश्वरस्य विदारणमभिनीय महाश्चर्यान्वितं राजानमभाषत—'राजन्, अवसानसमये भवता शुभसूचकं द्रष्टुमुचितम् । ततः कल्याणपरम्परावाप्तये भवदात्मजाकारायास्तरुण्या निखिललक्षणोपेतस्य राजनन्दनस्य विवाहः कार्यः' इति । तदवलोकनकुतूहलेन महीपालेनानुज्ञातः स सकलमोहजनकमञ्जनं लोचनयोर्निक्षिप्य परितो व्यलोकयत् । सर्वेषु 'तदैन्द्रजालिकमेव कर्म' इति साद्भुतं पश्यत्सु रागपल्लवितहृदयेन राजवाहनेन पूर्वसङ्केतसमागतामवन्तिसुन्दरीं वैवाहिकमन्त्रतन्त्रनैपुण्येनाग्निं साक्षीकृत्य संयोजयामास । क्रियावसाने सति 'इन्द्र-

जालपुरुषाः, सर्वे गच्छन्तु भवन्तः' इति द्विजन्मनोच्चैरुच्यमाने सर्वे मायामानवा यथायथमन्तर्भावं गताः। राजवाहनोऽपि पूर्व-कल्पितेन गूढोपायचातुर्येणैन्द्रजालिकपुरुषवत्कन्यान्तःपुरं विवेश। मालवेन्द्रोऽपि तदद्भुतं मन्यमानस्तस्मै वाडवाय प्रचुरतरं धनं दत्त्वा विद्येश्वरम् 'इदानीं साधय' इति विसृज्य स्वयमन्तर्मन्दिरं जगाम। ततोऽवन्तिसुन्दरी प्रियसहचरीवरपरिवारा वल्लभोपेता सुन्दरं मन्दिरं ययौ। एवं दैवमानुषबलेन मनोरथसाफल्य-मुपेतो राजवाहनः सरसमधुरचेष्टाभिः शनैःशनैर्हरिणलोचनाया लज्जामपनयन् रहो विश्रम्भमुपजनयन् संलापे तदनुलापपीयूष-पानलोलश्चित्रचित्रं चित्तहारिणं चतुर्दशभुवनवृत्तान्तं श्रावयामास।

ततः प्रवृत्तासु प्रीतिसङ्कथासु प्रियवयस्यगणानुयुक्तः स्वस्य च सोमदत्तपुष्पोद्भवयोश्चरितमनुवर्ण्य सुहृदामपि वृत्तान्तं क्रमेण श्रोतुं कृतप्रस्तावस्तांश्च तदुक्तावन्वयुङ्क्त। तेषु प्रथमं प्राह स्म किलापहारवर्मा—"देव, त्वयि तदावतीर्णे द्विजोपकारायासुरविवरं त्वदन्वेषण-प्रसृते च मित्रगणे अहमपि महीमटन्नङ्गेषु गङ्गातटे वहिश्चम्पायाः कश्चिदस्ति मरीचिर्नाम महर्षिरिति कुतश्चित् संलपतो जनसमाजा-दुपलभ्यासुतो बुभुत्सुस्त्वद्गतिं तमुद्देशमगमम्।

अपहारवर्मणः वृत्तवर्णनम्

न्यशामयं च तस्मिन्नाश्रमे कस्यचिच्चूतपोतकस्य छायायां कमप्युद्विग्नवर्णं तापसम्। अमुना चातिथिवदुपचरितः क्षणं विश्रान्तः क्वासौ भगवान् मरीचिः तस्मादहमुपलिप्सुः प्रसङ्गप्रोषितस्य सुहृदो गतिम्, आश्चर्यज्ञानविभवो हि स महर्षिर्मह्यां विश्रुत इत्यवादिषम्।

अथासावुष्णमायतञ्च निःश्वस्याशंसत—'आसीत्तादृशो मुनिरस्मिन्नाश्रमे। तमेकदा काममञ्जरी वारयुवतिः सनिर्वेदमभ्येत्य अभ्यवन्दिष्ट।

तस्मिन्नेव च क्षणे मातृप्रमुखस्तदाप्तवर्गः सानुक्रोशमनुप्रधावितस्तत्रैवाविच्छिन्नपातमपतत्। स किल कृपालुस्तं जनमार्द्रया गिराश्वास्यार्तिकारणं तां गणिकामपृच्छत्। सा तु सव्रीडेव सविषादेव सगौरवेव चाब्रवीत्—'भगवन्, ऐहिकस्य सुखस्याभाजनं जनोऽयमामुष्मिकाय श्वोवसीयायार्ताभ्युपपत्तिवित्तयोर्भगवत्पादयोर्मूलं शरणमभिप्रपन्नः' इति।

अथ सा वारयुवतिस्तेन तापसेन 'भद्रे, ननु दुःखाकरोऽयं वनवासः। तस्य फलमपवर्गः स्वर्गो वा। प्रथमस्तु तयोः प्रकृष्टज्ञानसाध्यः प्रायो दुःसम्पाद एव, द्वितीयस्तु सर्वस्यैव

सुलभः कुलधर्मानुष्ठायिनः। तदशक्यारम्भादुपरम्य मातुर्मते वर्तस्व' इति सानुकम्पमभिहिता 'यदीह भगवत्पादमूलमशरणम्, शरणमस्तु मम कृपणाया हिरण्यरेता देव एव' इत्युदमनायत।

स तु मुनिरनुविमृश्य गणिकामातरमवदत्—'सम्प्रति गच्छ गृहान्। प्रतीक्षस्व कानिचिद्दिनानि यावदियं भूयोभूयश्चास्माभिर्विबोध्यमाना प्रकृतावेव स्थास्यति' इति।

'तथा' इति तस्याः प्रतियाते स्वजने सा गणिका तमृषिमलघुभक्तिर्नात्यादृतशरीरसंस्कारा गन्धमाल्यधूपदीपनृत्यगीतवाद्यादिभिः क्रियाभिरेकान्ते च त्रिवर्गसम्बन्धिनीभिः कथाभिरध्यात्मवादैश्चानुरूपैरल्पीयसैव कालेनान्वरञ्जयत्।

निशम्यैतन्नियतिबलान्नु तत्पाटवान्नु स्वबुद्धिमान्द्यान्नु स्वनियममनादृत्य तस्यामसौ प्रासजत्। सा सुदूरं मूढात्मानं च तं प्रवहणेन नीत्वा पुरमुदारशोभया राजवीथ्या स्वभवनमनैषीत्। अभूच्च घोषणा 'श्वः कामोत्सवः' इति। उत्तरेद्युः स्नातानुलिप्तमारचितमञ्जुमालमारब्धकामिजनवृत्तं निवृत्तस्ववृत्ताभिलाषं क्षणमात्रे गतेऽपि तया विना दूयमानं तमृद्धिमता राजमार्गेणोत्सवसमाजं नीत्वा क्वचिदुपवनोद्देशे युवतिजनशतपरिवृतस्य राज्ञः

सन्निधौ समासदत्, स्मितमुखेन तेन 'भद्रे, भगवता सह निषीद' इत्यादिष्टा सविभ्रमं कृतप्रणामा सस्मितं न्यषीदत् ।

तत्र काचिदुत्थाय बद्धाञ्जलिरुत्तमाङ्गना—'देव, जितानयाहम् । अस्यै दास्यमद्यप्रभृत्यभ्युपेतं मया' इति प्रभुं प्राणंसीत् । विस्मयहर्षमूलश्च कोलाहलो लोकस्योदजिहीत । हृष्टेन च राज्ञा महार्हैं रत्नालङ्कारैर्महता च परिबर्हेणानुगृह्य विसृष्टा वारमुख्याभिः पौरमुख्यैश्च गणशः प्रशस्यमाना स्वभवनमगत्वैव तमृषिमभाषत—'भगवन्, अयमञ्जलिः, चिरमनुगृहीतोऽयं दासजनः, स्वार्थ इदानीमनुष्ठेयः' इति ।

स तु रागादशनिहत इवोद्भ्राम्याब्रवीत्—'प्रिये, किमेतत् ? कुत इदमौदासीन्यम् ? क्व गतस्तव मय्यसाधारणोऽनुरागः ?' इति । अथ सा सस्मितमवादीत्—'भगवन्, ययाद्य राजकुले मत्तः पराजयोऽभ्युपेतस्तस्याश्च मम च कस्मिंश्चित्सङ्घर्षे 'मरीचिमात्रं जितवतीव श्लाघसे' इति तयास्म्यहमधिक्षिप्ता । दास्यपणबन्धेन चास्मिन्नर्थे प्रावर्तिषि । सिद्धार्था चास्मि त्वत्प्रसादात्' इति । स तया तथावधूतो दुर्मतिः कृतानुशयः शून्यवन्न्यवर्तिष्ट । यस्तयैवं कृतस्तपस्वी तमेव मां महाभाग मन्यस्व । स्वशक्तिनिषिक्तं रागमुद्धृत्य तयैव बन्धक्या महद्वैराग्यमर्पितम् । अचिरा-

देव शक्य आत्मा त्वदर्थसाधनक्षमः कर्तुम् । अस्यामेव तावद्ङ्गपुर्यां चम्पायाम्' इति ।

अनुमतमुनिशासनस्त्वहममुनैव सहोपास्य सन्ध्यामनुरूपाभिः कथाभिस्तमनुशय्य नीतरात्रिः प्रत्युन्मिषत्युदयप्रस्थदावकल्पे कल्पद्रुमकिसलयावधीरिण्यरुणार्चिषि तं नमस्कृत्य नगरायोदचलम् ।

एष्वेव दिवसेषु काममञ्जर्याः स्वसा यवीयसी रागमञ्जरी नाम पञ्चवीरगोष्ठे सङ्गीतकमनुष्ठास्यतीति सान्द्रादरः समागमन्नागरजनः । स चाहं सह सख्या धनमित्रेण तत्र सन्न्यधिषि । प्रवृत्तनृत्यायां च तस्यां द्वितीयं रङ्गपीठं ममाभून्मनः ।

सोऽहं स्वगृहमेत्य दुर्निवारयोत्कण्ठया दूरीकृताहारस्पृहः शिरःशूलस्पर्शनमपदिशन् विविक्ते तल्पे मुक्तैरवयवैरशयिषि ।

ततश्च काञ्चित् काममञ्जर्याः प्रधानदूतीं धर्मरक्षितां नाम शाक्यभिक्षुकीं चीवरपिण्डदानादिनोपसङ्गृह्य तन्मुखेन तया बन्धक्या पणबन्धमकरवम्—'अजिनरत्नमुदारकान्मुषित्वा मया तुभ्यं देयम् , यदि प्रतिदानं रागमञ्जरी' इति । सोऽहं सम्प्रतिपन्नायां च तस्यां तथा तदर्थं सम्पाद्य मद्गुणोन्मादिताया रागमञ्जर्याः करकिसलयमग्रहीषम् ।

अथ भगवन्तं मरीचिं वेशकृच्छ्रादुत्थाय पुनःप्रतितप्ततपः-प्रभावप्रत्यापन्नदिव्यचक्षुषमुपसङ्गम्य तेनास्म्येवंभूतत्वदर्शनमवगमितः ।

तेष्वेव दिवसेषु चण्डवर्मा सिंहवर्मावधूतदुहितृप्रार्थनः कुपितोऽभियुज्य पुरमवारुणत् । अमर्षणश्चाङ्गराजो यावदरिः पारग्रामिकं विधिमाचिकीर्षति तावत्स्वयमेव प्राकारं निर्भिद्य प्रत्यासन्नानपि सहायानप्रतीक्षमाणो निर्गत्याभ्यधिकबलेन विद्विषा महति सम्पराये भिन्नवर्मा सिंहवर्मा बलादगृह्यत । अम्बालिका च बलवदभिगृह्य चण्डवर्मणा हठात् परिणेतुमात्मभवनमनीयत । कौतुकं च स किल क्षपावसाने विवाह इत्यबध्नात् ।

अहं च धनमित्रगृहे तद्विवाहायैव पिनद्धमङ्गलप्रतिसरस्तमेवमवोचम्—'सखे, समापतितमेवाङ्गराजाभिसरं राजमण्डलम् । सुगूढमेव सम्भूय पौरवृद्धैस्तदुपावर्तय । उपावृत्तश्च कृत्तशिरसमेव शत्रुं द्रक्ष्यसि' इति ।

'तथा' इति तेनाभ्युपगते गतायुषोऽमुष्य भवनमुत्सवाकुलमुपसमाधीयमानपरिणयोपकरणमितस्ततः प्रवेशनिर्गमप्रवृत्तलोकसम्बाधमलक्ष्यशस्त्रिकः सह प्रविश्य मङ्गलपाठकैरम्बालिकापाणिपल्लवमग्नौ साक्षिण्याथर्वणेन विधिनार्प्यमाणमादित्समानस्या-

थामिनं वाहुदण्डमाकृष्यच्छुरिकयोरसि प्राहार्षम्। स्फुरतश्च कतिपयानन्यानपि यमविषयमगमयम्। अस्मिन्नेव क्षणे तवास्मि नवाम्बुवाहस्तनितगम्भीरेण स्वरेणानुगृहीतः" इति।

श्रुत्वा च स्मित्वा च देवोऽपि राजवाहनः 'कथमसि कार्कश्येन कर्णीसुतमप्यतिक्रान्तः' इत्यभिधाय अर्थपालमुखे निधाय स्निग्धदीर्घां दृष्टिम्—'आचष्टां भवानात्मचरितम्' इत्यादिदेश। सोऽपि बद्धाञ्जलिरभिदधे—

"देव, सोऽहमप्येभिरेव सुहृद्भिरेककर्मोर्मिमालिनेमि भूमिवलयं परिभ्रमन्नुपासरं कदाचित्काशीपुरीं वाराणसीम्। उपस्पृश्य

अर्थपालकृतं स्ववृत्तकथनम्

मणिभङ्गनिर्मलाम्भसि मणिकर्णिकायामविमुक्तेश्वरं भगवन्तमन्धकमथनमभिप्रणम्य प्रदक्षिणं परिभ्रमन् पुरुषमेकमायामवन्तमविरतरुदितोच्छून-ताम्रदृष्टिमद्राक्षम्। अतर्कयञ्च—'कर्कशोऽयं पुरुषः, कार्पण्यमिव वर्षति क्षीणतारं चक्षुः, आरम्भश्च साहसानुवादी, नूनमसौ प्राणनिःस्पृहः किमपि कृच्छ्रं प्रियजनव्यसनमूलं प्रतिपत्स्यते। तत् पृच्छेयमेनम्। अस्ति चेन्ममापि कोऽपि साहाय्यदानावकाशस्तमेनमभ्युपेत्येत्यपृच्छम्—'भद्र, सन्नाहोऽयं साहसमवगमयति। न चेद्गोप्यमिच्छामि श्रोतुं शोकहेतुम्' इति।

स मां सबहुमानं निर्वर्ण्य 'को दोषः, श्रूयताम्' इति क्वचित् करवीरतले मया सह निषण्णः कथामकार्षीत्—'महाभाग, सोऽहमस्मि पूर्वेषु कामचरः पूर्णभद्रो नाम गृहपतिपुत्रः। प्रयत्न-संवर्धितोऽपि पित्रा दैवच्छन्दानुवर्ती चौर्यवृत्तिरासम्। अथास्यां काशीपुर्यामर्यवर्यस्य कस्यचिद्गृहे चोरयित्वा रूपाभिग्राहितो बद्धः। वध्ये च मयि मत्तहस्ती मृत्युविजयो नाम हिंसाविहारी राजगोपुरोपरितलाधिरूढस्य पश्यतः कामपालनाम्न उत्तमा-मात्यस्य शासनाज्जनकण्ठरवद्विगुणितघण्टारवो मण्डलितहस्त-काण्डं समभ्यधावत्। अभिपत्य च मया निर्भयेन निर्भर्त्सितो भीतवन्न्यवर्तिष्ट।

मन्त्रिणा पुनरहमाहूयाभ्यधायिषि—'भद्र, मृत्युरेवैष मृत्यु-विजयो नाम हिंसाविहारी। सोऽयमपि तावत् त्वयैवम्भूतः कृतः। तद्विरम्य कर्मणोऽस्मान्मलीमसात् किमलमसि प्रतिपद्या-स्मानार्यवृत्त्या वर्तितुम्' इति।

मयापि पर्यश्रुणा सोऽभिहितः—'सौम्य, किं तव गोपायित्वा। यस्तस्य सुतो यक्षकन्यया देवस्य राजवाहनस्य पादशुश्रूषार्थं देव्या वसुमत्या हस्तन्यासः कृतः सोऽहमस्मि।

शक्ष्यामि सहस्रमपि सुभटानामुदायुधानां हत्वा पितरं मोचयितुम्। अपि तु सङ्कुले यदि कश्चित् पातयेत्तदङ्गे शस्त्रिकां सर्व एव मे यत्नो भस्मनि हुतमिव भवेत्' इति।

अनवसितवचन एव मयि महानाशीविषः प्राकाररन्ध्रेणोदैरयच्छिरः। तमहं मन्त्रौषधबलेनाभिगृह्य पूर्णभद्रमब्रवम्—'भद्र, सिद्धं नः समीहितम्। अनेन तातमलक्ष्यमाणः सङ्कुले यदृच्छया पातितेन नाम दंशयित्वा तथा विषं स्तम्भयेयं यथा मृत इत्युदास्येत। त्वया तु मुक्तसाध्वसेन माता मे बोधयितव्या—'यो यक्ष्या वने देव्या वसुमत्या हस्तार्पितो युष्मत्सूनुः सोऽनुप्राप्तः पितुरवस्थां मदुपलभ्य बुद्धिबलादित्थमाचरिष्यति। त्वया तु मुक्तत्रासया राज्ञे प्रेषणीयम्—'एष खलु क्षात्रधर्मो यद्बन्धुरबन्धुर्वा दुष्टः स निरपेक्षं निग्राह्य इति। स्त्रीधर्मश्चैष यददुष्टस्य दुष्टस्य वा भर्तुर्गतिर्गन्तव्येति। तदहममुनैव सह चिताग्निमारोक्ष्यामि। युवतिजनानुकूलः पश्चिमो विधिरनुज्ञातव्यः' इति।

स एवं निवेदितो नियतमनुज्ञास्यति। ततः स्वमेवागारमानीय काण्डपटीपरिक्षिप्ते विविक्तोद्देशे दर्भसंस्तरणमधिशाय्य

स्वयं कृतानुमरणमण्डनया त्वया च तत्र सन्निधेयम्। अहं च बाह्यकक्षागतस्त्वया प्रवेशयिष्ये। ततः पितरमुज्जीव्य तदभिरुचितेनाभ्युपायेन चेष्टिष्यामहे' इति। स 'तथा' इति हृष्टतरस्तूर्णमगमत्। अहं तु घोषणस्थाने चिञ्चावृक्षं घनतरविपुलशाखमारुह्य गूढतनुरतिष्ठम्। आरूढश्च लोको यथायथमुच्चैःस्थानानि। उच्चावचप्रलापाः प्रस्तुताः।

तावन्मे पितरं तस्करमिव पश्चाद्बद्धभुजमुद्धुरध्वनिमहाजनानुयातमानीय मदभ्याश एव स्थापयित्वा मातङ्गास्त्रिरघोषयत्— 'एष मन्त्री कामपालो राज्यलोभाद्भर्तारं चण्डसिंहम्, युवराजं चण्डघोषं च विषान्नेनोपांशु हत्वा पुनर्देवोऽपि सिंहघोषः पूर्णयौवन इत्यमुष्मिन्पापमाचरिष्यन् विश्वासाद्रहस्यभूमौ पुनरमात्यं शिवनागमाहूय स्थूणमञ्जारवर्षं च राजवधायोपजप्य तैः स्वामिभक्त्या विवृतगुह्यो 'राज्यकामुकस्यास्य ब्राह्मणस्यान्धतमसप्रवेशो न्याय्य' इति प्राड्विवाकवाक्यादक्ष्युद्धरणाय नीयते। पुनरन्योऽपि यदि स्यादन्यायवृत्तिस्तमप्येवमेव यथार्हेण दण्डेन योजयिष्यति देवः' इति।

श्रुत्वैतद्बद्धकलकले महाजने पितुरङ्गे प्रदीप्तशिरसमाशीविषं व्यक्षिपम्। अहं च भीतो नामावप्लुत्य तत्रैव जनादनुलीनः

क्रुद्धव्यालदष्टस्य तातस्य विहितजीवरक्षो विषं क्षणादस्तम्भयम् । अपतच्चैष भूमौ मृतकल्पः । प्रालपं च 'सत्यमिदं राजावमानिनं दैवो दण्ड एव स्पृशतीति । यदयमक्षिभ्यां विनावनिपेन चिकीर्षितः, प्राणैरेव वियोजितो विधिना' इति । मदुक्तं च केचिदन्वमन्यन्त, अपरे पुनर्निनिन्दुः । दर्वीकरस्तु तमपि चण्डालं दष्ट्वा रूढत्रासद्रुतलोकदत्तमार्गः प्राद्रवत् ।

अथ मदम्बा पूर्णभद्रबोधितार्था तादृशेऽपि व्यसने नातिविह्वला कुलपरिजनानुयाता पद्भ्यामेव धीरमागत्य मत्पितुरुत्तमाङ्गमुत्सङ्गेन धारयन्त्यासित्वा राज्ञे समादिशत्—'एष मे पतिस्तवापकर्ता न वेति दैवमेव जानाति । न मेऽनयास्ति चिन्तया फलम् । अस्य तु पाणिग्राहकस्य गतिमनुप्रपद्यमाना भवत्कुलं कलङ्कयेयम् । अतोऽनुमन्तुमर्हसि भर्त्रा सह चिताधिरोहणाय माम्' इति । श्रुत्वा चैतत् प्रीतियुक्तः समादिक्षत् क्षितीश्वरः—'क्रियतां कुलोचितः संस्कारः । उत्सवोत्तरं च पश्चिमं विधिसंस्कारमनुभवतु मे भगिनीपतिः' इति ।

चण्डाले तु मत्प्रतिषिद्धसकलमन्त्रवादिप्रयासे संस्थिते 'कामपालोऽपि कालदष्ट एव' इति स्वभवनोपनयनममुष्य

स्वमाहात्म्यप्रकाशनाय महीपतिरन्वमंस्त। आनीतश्च पिता मे विविक्तायां भूमौ दर्भशय्यामधिशाय्य स्थितोऽभूत्।

अथ मदम्बा मरणमण्डनमनुष्ठाय सकरुणं सखीरामन्त्र्य, मुहुरभिप्रणम्य भवनदेवता यत्ननिवारितपरिजनाक्रन्दिता पितुर्मे शयनस्थानमेकाकिनी प्राविक्षत्। तत्र च पूर्वमेव पूर्णभद्रोपस्थापितेन च मया वैनतेयतां गतेन निर्विषीकृतं भर्तारमैक्षत। हृष्टतमा पत्युः पादयोः पर्यश्रुमुखी प्रणिपत्य मां च मुहुर्मुहुः प्रस्नुतस्तनी परिष्वज्य सहर्षबाष्पगद्गदमगदत्—

'पुत्र, योऽसि जातमात्रः पापया मया परित्यक्तः, स किमर्थमेवं मामतिनिर्घृणामनुगृह्णासि। अथवैष निरपराध एव ते जनयिता। युक्तमस्य प्रत्यानयनमन्तकाननात्। क्रूरा खलु तारावली या त्वामुपलभ्यापि तत्त्वतः कुबेरादसमर्प्य मह्यमर्पितवती देव्यै वसुमत्यै सैव वा सदृशकारिणी। न हि तादृशाद्भाग्यराशेर्विना मादृशो जनोऽल्पपुण्यस्तवार्हति कलप्रलापामृतानि कर्णाभ्यां पातुम्। एहि, परिष्वजस्व' इति भूयोभूयः शिरसि जिघ्रन्त्यङ्कमारोपयन्ती, तारावलीं गर्हयन्त्यालिङ्गयन्त्यश्रुभिरभिषिञ्चती चोत्कम्पिताङ्गयष्टिरन्यादृशीव क्षणमजनिष्ट।

जनयितापि मे नरकादिव स्वर्गम्, तादृशाद् व्यसनात्तथाभूतमभ्युदयमारूढः पूर्णभद्रेण विस्तरेण यथावृत्तान्तमावेदितो भगवतो मघवतोऽपि भाग्यवन्तमात्मानमजीगणत् । मनागिव च मत्सम्बन्धमाख्याय हर्षविस्मितात्मनोः पित्रोरकथयम्—'आज्ञापयतं काद्य नः प्रतिपत्तिः' इति । पिता मे प्राब्रवीत्—

'वत्स, गृहमेवेदमस्मदीयमतिविशालप्राकारवलयमक्षय्यायुधस्थानम् । अलङ्घ्यतमा च गुप्तिः । उपकृताश्च मयातिबहवः सन्ति सामन्ताः । प्रकृतयश्च भूयस्यो न मे व्यसनमनुरुध्यन्ते । सुभटानां चानेकसहस्रमस्त्येव ससुहृत्पुत्रदारम् । अतोऽत्रैव कतिपयान्यहानि स्थित्वा बाह्याभ्यन्तरङ्गान् कोपानुत्पादयिष्यामः । कुपितांश्च सङ्गृह्य प्रोत्साह्यास्य प्रकृत्यमित्रानुत्थाप्य सहजांश्च द्विषः, दुर्दान्तमेनमुच्छेत्स्यामः' इति । 'को दोषः, तथास्तु' इति तातस्य मतमन्वमंसि ।

तथास्मासु प्रतिविधाय तिष्ठत्सु राजापि विज्ञापितोदन्तो जातानुतापः पारग्रामिकान् प्रयोगान् प्रायः प्रायुङ्क्त । ते चास्माभिः प्रत्यहमहन्यन्त । अस्मिन्नेवावकाशे पूर्णभद्रमुखाच्च राज्ञः शय्यास्थानमवगम्य तदैव स्वोदवसितभित्तिकोणादारभ्योरगा-

-स्येन सुरङ्गामकार्षम् । गता च सा भूमिस्स्वर्गकल्पमनल्पकन्य-
-काजनं कमप्युद्देशम् । अव्यथिष्ट च दृष्ट्वैव स मां नारीजनः ।

तत्र काचिदिन्दुकलेव स्वलावण्येन रसातलान्धकारं निह्नु-
-वाना कन्यका चन्दनलतेव मलयमारुतेन, मद्दर्शनेनोदकम्पत ।
तथाभूते च तस्मिन्नङ्गनासमाजे कुसुमितेव काशयष्टिः, पाण्डु-
शिरसिजा स्थविरा काचिच्चरणयोर्मे निपत्य त्रासदीनमब्रूत—
'दीयतामभयदानमस्मा अनन्यशरणाय स्त्रीजनाय । किमसि
देवकुमारो दनुजयुद्धतृष्णया रसातलं विविक्षुः । आज्ञापय
कोऽसि । कस्य हेतोरागतोऽसि' इति ।

सा तु मया प्रत्यवादि—'सुदत्यः, मास्म भवत्यो भैषुः ।
अहमस्मि द्विजातिवृषात्कामपालाद्देव्यां कान्तिमत्यामुत्पन्नोऽर्थ-
पालो नाम । सत्यर्थे निजगृहान्नृपगृहं सुरङ्गयोपसरन्निहान्तरे
वो दृष्टवान् । कथयत काः स्थ यूयम् । कथमिह निवसथ' इति ।

सोदञ्जलिरुदीरितवती—'भर्तृदारक, भाग्यवत्यो वयम्,
यास्त्वामेभिरेव चक्षुर्भिरनघमद्राक्ष्म । श्रूयताम् । यस्तव
मातामहश्चण्डसिंहः, तेनास्यां देव्यां लीलावत्यां चण्डघोषः
कान्तिमतीत्यपत्यद्वयमुदपादि । चण्डघोषस्तु युवराजोऽत्यासङ्गा-

दङ्गनासु राजयक्ष्मणा सुरक्षयमगादन्तर्वत्न्यां देव्यामाचारवत्याम् । असुया चेयं मणिकर्णिका नाम कन्या प्रसूता । अथ प्रसववेदनया मुक्तजीविताचारवती पत्युरन्तिकमगमत् ।

अथ देवश्चण्डसिंहो मामाहूयोपह्वरे समाज्ञापयत्—'ऋद्धिमति, कन्यकेयं कल्याणलक्षणा । तामिमां मालवेन्द्रनन्दनाय दर्पसाराय विधिवद्वर्धयित्वा दित्सामि । बिभेमि च कान्तिमतीवृत्तान्तादारभ्य कन्यकानां प्रकाशावस्थापनात् । अत इयमरातिव्यसनाय कारिते महति भूमिगृहे कृत्रिमशैलगर्भोत्कीर्णनानामण्डपप्रेक्षागृहे प्रचुरपरिबर्हया भवत्या संवर्ध्यताम् । अस्त्यत्र भोग्यवस्तु वर्षशतेनाप्यक्षय्यम्' इति । स तथोक्त्वा निजवासगृहस्य त्र्यङ्गुलभित्तावर्धपादं किष्कुविष्कम्भमुद्धृत्य तेनैव द्वारेण स्थानमिदमस्मानवीविशत् । इह च नो वसन्तीनां द्वादशसमाः समत्ययुः । इयं च वत्सा तरुणीभूता । न चाद्यापि स्मरति राजा । काममियं पितामहेन दर्पसाराय सङ्कल्पिता । त्वदम्बया कान्तिमत्या चेयं गर्भस्थैव द्यूतजिता स्वमात्रा तवैव जायात्वेन समकल्प्यत । तदत्र प्राप्तरूपं चिन्त्यतां कुमारेणैव' इति ।

तां पुनरवोचम्—'अद्यैव राजगृहे किमपि कार्यं साधयित्वा प्रतिनिवृत्तो युष्मासु यथार्हं प्रतिपत्स्ये' इति । तेनैव दीपदर्शित-

बिलपथेन गत्वा स्थितेऽर्धरात्रे तदर्धपादं प्रत्युद्धृत्य वासगृहं प्रविष्टो विश्रब्धसुप्तं सिंहघोषं जीवग्राहमग्रहीषम् । आकृष्य च तमहिमिवाहिशत्रुः स्फुरन्तममुनैव भित्तिरन्ध्रपथेन स्त्रैणसन्निधिमनैषम् । आनीय च स्वभवनमायसनिगडसन्दितचरणयुगलमवनमितमलिनवदनमश्रुबहलरक्तचक्षुषमेकान्ते जनयित्रोरदर्शयम् । अकथयं च बिलकथाम् ।

अथ पितरौ प्रहृष्टतरौ तं निकृष्टाशयं निशाम्य बन्धने नियम्य तस्या दारिकाया यथार्हेण कर्मणा मां पाणिमग्राहयेताम् । अनाथकं च तद्राज्यमस्मदायत्तमेव जातम् । प्रकृतिकोपभयात्तु मन्मात्रा मुमुक्षितोऽपि न मुक्त एव सिंहघोषः । तथास्थिताश्च वयमङ्गराजः सिंहवर्मा देवपादानां भक्तिमान्कृतकर्मा चेत्यमित्राभियुक्तमेनमभ्यसराम । अभूवं च भवत्पादपङ्कजरजोऽनुग्राह्यः । स चेदानीं भवच्चरणप्रणामप्रायश्चित्तमनुतिष्ठतु सर्वदुश्चरितक्षालनमनार्यः सिंहघोषः" इत्यर्थपालः प्राञ्जलिः प्रणनाम ।

देवोऽपि राजवाहनः 'बहु पराक्रान्तम्, बहूपयुक्ता च बुद्धिः, मुक्तबन्धस्ते श्वशुरः पश्यतु माम्' इत्यभिधाय भूयः प्रमतिमेव पश्यन् प्रीतिस्मेरः 'प्रस्तूयतां तावदात्मीयं चरितम्' इत्याज्ञापयत

शुश्राव च क्रमशः अपहारवर्मोपहारवर्माऽर्थपाल-प्रमति-मित्रगुप्त-मन्त्रगुप्त-विश्रुतवर्णितं स्वस्वोदन्तजातं देवो राजवाहनः ।

ततस्ते तत्र सङ्गता अपहारवर्मोपहारवर्मार्थपालप्रमतिमित्रगुप्तमन्त्रगुप्तविश्रुताः कुमाराः पाटलिपुरे यौवराज्यमुपभुञ्जानं समाकारणे पूर्वकृतसङ्केतं वामलोचनया भार्यया सह कुमारं सोमदत्तं सेवकैरानाय्य सराजवाहनाः सम्भूयावस्थिता मिथः प्रमोदसंवलिताः कथा यावद्विदधति तावत्पुष्पपुराद्राज्ञो राजहंसस्याज्ञापत्रमादाय समागता राजपुरुषाः प्रणम्य राजवाहनं व्यजिज्ञपन्– 'स्वामिन्, एतज्जनकस्य राजहंसस्याज्ञापत्रं गृह्यताम् ।' इत्याकर्ण्य समुत्थाय भूयोभूयः सादरं प्रणम्य सदसि तदाज्ञापत्रमग्रहीत् । शिरसि चाधाय तद् उत्तार्योत्कील्य राजा राजवाहनः सर्वेषां शृण्वतामेवावाचयत्—

दशकुमारेभ्यः राजहंसस्य आज्ञापत्रम्

"स्वस्ति श्रीपुष्पपुरराजधान्याः श्रीराजहंसभूपतिश्चम्पानगरीमधिवसतो राजवाहनप्रमुखान् कुमारानाशास्याज्ञापत्रं प्रेषयति । यथा यूयमितो मामामन्त्र्य प्रणम्य प्रस्थिताः पथि कस्मिंश्चिद्वनोद्देश उपशिवालयं स्कन्धावारमवस्थाप्य स्थिताः । तत्र राजवाहनं शिवपूजार्थं निशि शिवालये स्थितं

प्रातरनुपलभ्यावशिष्टाः सर्वेऽपि कुमाराः 'सहैव राजवाहनेन राजहंसं प्रणंस्यामो न चेत्प्राणांस्त्यक्ष्यामः' इति प्रतिज्ञाय सैन्यं परावर्त्य राजवाहनमन्वेष्टुं पृथक्प्रस्थिताः। एवं भवद्वृत्तान्तं ततः प्रत्यावृत्तानां सैनिकानां मुखादाकर्ण्य महदुःखोदन्वति मग्नमनसावुभावहं युष्मज्जननी च 'वामदेवाश्रमं गत्वैतद्वृत्तान्तं तद्विदितं विधाय प्राणपरित्यागं कुर्वः' इति निश्चित्य तदाश्रममुपगतौ तं मुनिं प्रणम्य यावत्स्थितौ तावदेव तेन त्रिकालवेदिना मुनिना विदितमेवास्मन्मनीषितं निश्चयमवबुध्य प्रावाचि—'राजन्, प्रथममेवैतत्सर्वं युष्मन्मनीषितं विज्ञानबलादज्ञायि। यदेते त्वत्कुमारा राजवाहननिमित्ते कियन्तमनेहसमापदमासाद्य भाग्योदयादसाधारणेन विक्रमेण विहितदिग्विजयाः प्रभूतानि राज्यान्युपलभ्य षोडशाब्दान्ते विजयिनं राजवाहनं पुरस्कृत्य प्रत्येत्य तव वसुमत्याश्च पादानभिवाद्य भवदाज्ञाविधायिनो भविष्यन्ति अतस्तन्निमित्तं किमपि साहसं न विधेयम्' इति। तदाकर्ण्य तत्प्रत्ययाद्धैर्यमवलम्ब्याद्यप्रभृत्यहं देवी च प्राणमधारयाव। इदानीमासन्नवर्तिन्यवधौ वामदेवाश्रमे गत्वा विज्ञप्तिः कृता—'स्वामिन्, त्वदुक्तावधिः पूर्णप्रायो भवति तत्प्रवृत्तिस्त्वयाद्यापि विज्ञायते' इति। श्रुत्वा मुनिरवदत्—'राजन्, राजवाहनप्रमुखाः

सर्वेऽपि कुमारा अनेकान् दुर्जयाञ्शत्रून् विजित्य दिग्विजयं विधाय भूवलयं वशीकृत्य चम्पायामेकत्र स्थिताः। तवाज्ञापत्रमादाय तदानयनाय प्रेष्यन्तां शीघ्रमेव सेवकाः' इति मुनिवचनमाकर्ण्य भवदाकारणायाज्ञापत्रं प्रेषितमस्ति। अतःपरं चेत्क्षणमपि यूयं विलम्बं विधास्यथ ततो मां वसुमतीं च मातरं कथावशेषावेव श्रोष्यथेति ज्ञात्वा पानीयमपि पथि भूत्वा पेयम्" इति।

एवं पितुराज्ञापत्रं मूर्ध्नि विधृत्य गच्छेमेति निश्चयं चक्रुः। अथ वशीकृतराज्यरक्षापर्याप्तानि सैन्यानि समर्थतरान् पुरुषानाप्तान् स्थाने स्थाने नियुज्य कियता सैन्येन मार्गरक्षां विधाय पूर्ववैरिणं मालवेशं मानसारं पराजित्य तदपि राज्यं वशीकृत्य पुष्पपुरे राज्ञो राजहंसस्य देव्या वसुमत्याश्च पादान्नमस्यामः। एवं निश्चित्य स्वस्वभार्यासंयुताः परिमितेन सैन्येन मालवेशं प्रति प्रस्थिताः।

प्राप्य चोज्जयिनीं तदैव सहायभूतैस्तैः कुमारैः परिवृतेन राजवाहनेनातिबलवानपि मालवेशो मानसारः क्षणेन पराजिग्ये निहतश्च।

ततस्तद्दुहितरमवन्तिसुन्दरीं समादाय चण्डवर्मणा तन्म-

न्त्रिणा पूर्वं कारागृहे रक्षितं पुष्पोद्भवं कुमारं सकुटुम्बं तत उन्मोचितं सह नीत्वा मालवेन्द्रराज्यं वशीकृत्य तद्रक्षणाय कांश्चित् सैन्यसहितान् मन्त्रिणो नियुज्यावशिष्टपरिमितसैन्यसहितास्ते कुमाराः पुष्पपुरं समेत्य राजवाहनं पुरस्कृत्य तस्य राजहंसस्य मातुर्वसुमत्याश्च चरणानभिवन्दितवन्तः।

तौ च पुत्रसमागमं प्राप्य परमानन्दमधिगतौ। ततो राज्ञो वसुमत्याश्च देव्याः समक्षं वामदेवो राजवाहनप्रमुखाणां दशानामपि कुमाराणामभिलाषं विज्ञाय तानाज्ञापयत्–'भवन्तः सर्वेऽप्येकवारं गत्वा स्वानि स्वानि राज्यानि न्यायेन परिपालयन्तु। पुनर्यदेच्छा भवति तदा पित्रोश्चरणाभिवन्दनायागन्तव्यम्' इति।

ततस्ते सर्वेऽपि कुमारास्तन्मुनिवचनं शिरस्याधाय तं प्रणम्य पितरौ च, गत्वा दिग्विजयं विधाय प्रत्यागमनान्ते स्वस्ववृत्तं पृथक्पृथङ्मुनिसमक्षं न्यवेदयन्। पितरौ च कुमाराणां निजपराक्रमाववोधकान्यतिदुर्घटानि चरितान्याकर्ण्य परमानन्दमाप्नुताम्।

ततो राजा मुनिं सविनयं व्यजिज्ञपत्—'भगवन्, तव

प्रसादादस्माभिर्मनुजमनोरथाधिकमवाङ्मनसगोचरं सुखमधिगतम् ।

अतः परं मम स्वामिचरणसन्निधौ वानप्रस्थाश्रममधिगत्यात्मसाधनमेव विधातुमुचितम् । अतः पुष्पपुरराज्ये मानसारराज्ये च राजवाहनमभिषिच्यावशिष्टानि राज्यानि नवभ्यः कुमारेभ्यो यथोदितं सम्प्रदाय ते कुमारा राजवाहनाज्ञाविधायिनस्तदेकमत्या वर्तमानाश्चतुरुदधिमेखलां वसुन्धरां समुद्धृत्य कण्टकानुपभुञ्जन्ति तथा विधेयं स्वामिना' इति ।

तेषां तत्पितुर्वानप्रस्थाश्रमग्रहणोपक्रमनिषेधे भूयांसमाग्रहं विलोक्य मुनिस्तानवदत् —'भोः कुमारकाः, अयं युष्मज्जनक एतद्वयःसमुचिते पथि वर्तमानः कायक्लेशं विनैव मदाश्रमस्थो वानप्रस्थाश्रमाश्रयणं चिकीर्षुः सर्वथा भवद्भिर्न निवारणीयः । अत्र स्थितस्त्वयं भगवद्भक्तिमुपलप्स्यते । भवन्तश्च पितृसन्निधौ न सुखमवाप्स्यन्ति' इति ।

महर्षेराज्ञामधिगम्य ते पितुर्वानप्रस्थाश्रमाधिगमप्रतिषेधाग्रहमत्यजन् । राजवाहनं पुष्पपुरेऽवस्थाप्य तदनुज्ञया सर्वेऽपि परिजनाः स्वानि स्वानि राज्यानि प्रतिपाल्य स्वेच्छया पित्रोः समीपे गतागतमकुर्वन् ।

एवमवस्थितास्ते राजवाहनप्रमुखाः सर्वेऽपि कुमारा राजवाहनाज्ञया सर्वमपि वसुधावलयं न्यायेन परिपालयन्तः परस्परमैकमत्येन वर्तमानाः पुरन्दरप्रभृतिभिरप्यतिदुर्लभानि राज्यसुखान्यन्वभूवन् ।



टिप्पणी (नोट्स)

(पृष्ठ १)

समस्तनगरीनिकषायमाणा–(समस्तानां नगरीणां निकषः आदर्शः स इव आचरतीति) जितनी भी राजधानियाँ हैं उनका आदर्श बनी।

मगधदेशशेखरीभूता–(मगधदेशस्य शेखरीभूता शिरोभूषणरूपा) मगधराष्ट्र की सिरमौर।

विरचितारातिसन्तापेन–(विरचितः कृतः अरातीनां शत्रूणां सन्तापो येन तादृशेन) शत्रुओं के संतापकारक।

वियन्मध्यहंसः–(वियतः आकाशस्य मध्ये हंसः सूर्यः) आकाश-सरोवर के राजहंस सूर्य के सदृश।

घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसोदर्यहृद्यनिरवद्यरूपः–(घनः अतिप्रभूतः दर्पः रूप-जनितो गर्वो यस्य स घनदर्पः स चासौ कन्दर्पः मन्मथश्च तस्य सौन्दर्यं तस्य सोदर्यं सदृशं, हृद्यं मनोहरं, निरवद्यं निर्दोषञ्च रूपं यस्य सः) अपने रूप का गर्व करने वाले कामदेव के सौन्दर्य के समान मनोरम और अनिन्द्य सौन्दर्य वाला।

लीलावतीकुलशेखरमणिः–(लीलावत्यो विलासिन्यो युवतयस्तासां यत्कुलं तस्य शेखरमणिः शिरोभूषणभूता) अन्तःपुर की विलासिनियों में सर्वश्रेष्ठ।

विजितामरपुरे–(विजितं समृद्ध्या तिरस्कृतममरपुरं देवेन्द्रनगरं येन तस्मिन्) अपनी समृद्धि के द्वारा इन्द्र की राजधानी अमरावती को भी कुछ न गिननेवाले।

अनन्तभोगलालिता–(अनन्ताः ये भोगाः सुखवैभवविलासाः तैर्लालिता पोषिता; अनन्तस्य वासुकेः सर्पराजस्य भोगैः फणामण्डलैर्लालिता धृता च) अगणित सुखभोगों में पली तथा (पृथिवी-पक्ष में) सर्पराज के फणामण्डल पर विराजित।

अन्वभावि-(अनु + भू + कर्मणि लुङ्-अनुभूता, भुक्ता वा) उपभुक्त की गई।

परमविधेयाः-(अतिवशंवदाः अतिविनीताः वा) अत्यन्त विनीत।

कुलामात्याः-(कुलक्रमेणागताः अमात्याः मन्त्रिणो वा) वंशपरम्परागत मन्त्रिगण।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) 'लीलावतीकुलशेखरमणी रमणी' में सन्धिविच्छेद कीजिये।

(२) 'विजितामरपुरे……यथासुखमन्वभावि।' इस वाक्य का वाच्यपरिवर्तन कीजिये।

(पृष्ठ २)

प्रत्यग्रसङ्ग्रामघस्मरम्-(प्रत्यग्रो नवीनो यः सङ्ग्रामः युद्धं तत्र घस्मरं शत्रूणां भक्षकम्) कुछ ही समय पूर्व चलने वाले संग्राम में शत्रुओं का भक्षण अथवा सर्वनाश कर देने वाले।

समुत्कटमानसारम्-(समुत्कटः अत्यन्तं प्रवृद्धः मानो बलदर्प एव सारो यस्य) अपने बल पर ही एक मात्र अभिमान करने वाले।

सहेलम्-(हेलया लीलया सहितं यथा स्यात् तथा) अनायास, बिना कष्ट के।

भेरीझाङ्कारेण-(भेरीणां समरदुन्दुभीनां झाङ्कारो महाशब्दः तेन) समरदुन्दुभियों की भयङ्कर ध्वनियों से।

दिग्दन्तावलवलयम्-(दिशां पालका ये दन्तावलाः गजाः दिग्गजा इति तेषां वलयं मण्डलम्) दिग्गजों के समूह को।

चतुरङ्गबलेन संयुतः-(हस्त्यश्वरथपादातेन सेनाङ्गेन सह) हाथी, घोड़ों, रथों और पदातियों की चतुरङ्गिणी सेना के साथ।

सङ्ग्रामाभिलाषेण रोषेण-(संग्रामे अभिलाषो यस्य तेन तादृशेन रोषेण क्रोधेन) ऐसे रोष के साथ जिसमें एक मात्र युद्ध करने की इच्छा भरी हो।

अनेकानेकपयूथसनाथः-(अनेकैरसंख्यैरनेकपानां हस्तिनां यूथैः समूहैः सनाथो युक्तः) अनेक गजराज-समूहों को साथ लिये।

विग्रहः सविग्रह इव-(सविग्रहः मूर्तिमान् विग्रहः सङ्ग्राम इव) साक्षात् युद्ध का अवतार।

साग्रहः-(आग्रहेण युद्धाभिनिवेशेन सह इति) युद्ध की लालसा से भरा।

शस्त्राशस्त्रि-(शस्त्रैः शस्त्रैश्च प्रहृत्येदं युद्धं प्रवृत्तमिति शस्त्राशस्त्रि-'तत्र तेनेदमिति सरूपे' इति सूत्रेण बहुव्रीहिः, समासान्त इच्प्रत्ययश्च) शस्त्र के बदले शस्त्र से।

परस्पराभिहतसैन्यम्-(परस्परस्याभिहतं सैन्यं यस्मिन् तादृशम्) जिसमें एक दूसरे की सेनायें मारी-काटी जा रही हों।

जीवग्राहमभिगृह्य-(जीवन्तं गृहीत्वेति 'समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः' इति सूत्रेण णमुल्) जीवित ही पकड़कर।

रत्नाकरमेखलाम्-(रत्नाकरः सागरो मेखला कटिसूत्रं यस्यास्ताम्) चतुर्दिक् समुद्र की करधनी से सुशोभित।

दयितमनोरथपुष्पभूतम्-(दयितस्य स्वामिनो मनोरथफलस्य पुष्पमिव भूतम्) अपने पति के मनोरथरूपी फल की उत्पत्ति के लिये फूल के समान।

सम्पन्न्यक्कृताखण्डलः-(सम्पदा न्यक्कृतः तिरस्कृत आखण्डल इन्द्रो येन) अपने वैभव से इन्द्र को भी मात करने वाले।

निजसम्पन्मनोरथानुरूपम्-(निजसम्पन्मनोरथयोरनुरूपं सदृशम्) अपने वैभव और मनोरथ के सदृश।

सीमन्तोत्सवम्-(सीमन्तोन्नयननामकः संस्कारविशेषः। तदानुषङ्गिकमुत्सवम्। 'चतुर्थे गर्भमासे सीमन्तोन्नयनम्'—आश्वलायनगृह्यसूत्र १·१३। सीमन्तः केशवेशो यस्मिन् कर्मणि उन्नीयते तत् सीमन्तोन्नयनम्) सीमन्तोन्नयन नामक संस्कार।

गुणैरहीनः-(गुणैरन्यूनः राजगुणसम्पन्न इति) सभी राजगुणों से युक्त।

ललाटतटन्यस्ताञ्जलिना-(ललाटतटे न्यस्तः स्थापितः अञ्जलिर्येन तादृशेन) हाथ जोड़कर सिर झुकाये।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

आविष्टः, अभिमुखीभूय, हस्ताहस्ति, अजनि, व्यधत्त।

(२) निम्नलिखित शब्दों के एक-एक पर्यायवाचक शब्द लिखिये—

घस्मरः, सविग्रहः, जन्यम्, न्यक्कृतम्, आखण्डलः।

(पृष्ठ ३)

देवसन्दर्शनलालसमानसः-(देवस्य भवतः सन्दर्शनेऽवलोकने लालसमभिलाषयुक्तं मानसं यस्य सः) मन में आपके दर्शन की लालसा लिये।

विरच्यार्चनार्हः-(विरच्या कर्त्तव्या या अर्चना पूजा तामर्हतीति) पूजा करने योग्य।

अनायि-(णीञ् प्रापणे, कर्मणि लुङ्, नीतः प्रापितो वा) पहुँचा दिया गया।

सम्यग्ज्ञाततदीयगूढचारभावः-(सम्यक् सुष्ठु ज्ञातो विदितः तदीयः तत्सम्बन्धी गूढः प्रच्छन्नः चारभावो गुप्तचरत्वं येन सः) वह गुप्तचर है—इस बात से पूर्णतया परिचित।

मन्दहासम्-(मन्दः हासः यस्मिन् कर्मणि तत्—क्रियाविशेषणम्) मुसकुराहट के साथ।

देशं······कथयतु-इस छद्मवेश में इधर-उधर भ्रमण करते हुए, आपको यदि कुछ पता चला हो तो बताइये।

महाकालनिवासिनम्-(महाकाले महाकालनाम्नि देवालये निवासोऽस्त्यस्येति तम्) महाकाल के मन्दिर में विराजमान।

कालीविलासिनम्–(कालीपतिम्, पार्वतीपतिम्) भवानीश, शङ्कर, महादेव।

एकवीराराातिघ्नीम्–(एकवीरश्चासावरातिः (शत्रुः) तं हन्तीति) शत्रुसेना के प्रमुख वीर सैनिक को मारनेवाली ।

अप्रतिभटम्–(न विद्यते प्रतिभटः प्रतिद्वन्द्वी यस्य तम्) योद्धाओं में बेजोड़।

अभियोक्तुम्–(आक्रमितुम्, अभिषेणयितुम्) चढ़ाई करने के लिये ।

उद्युङ्क्ते–(उद् + युज् + लट्, उद्युक्तो भवति चेष्टते वा) उद्योग कर रहा है ।

अभ्यासार्थं प्रश्न–

(१) निम्नलिखित वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन कीजिये–

(क) भूपतिः मन्दहासमभाषत ।

(ख) तेन अभाषि ।

(ग) अमात्यै राजा विज्ञापितोऽभूत् ।

(२) निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य लिखिये–

कालीविलासिनम्, महेश्वरम्, महाभिमानः ।

(पृष्ठ ४)

निरुपायेन–(नास्त्युपायः प्रतीकारो यस्य तेन अप्रतीकार्येण) जिसका हमारे द्वारा कोई प्रतीकार न किया जा सके ।

साम्प्रतमसाम्प्रतम्–(साम्प्रतमधुना असाम्प्रतम् अयुक्तमनुचितं वा) इस समय ठीक नहीं है ।

सहसा दुर्गसंश्रयः कार्यः–(सत्वरं दुर्गप्रवेशः कर्तव्यः) जितनी शीघ्रता से हो किले के भीतर पहुँच जाना चाहिये ।

वाक्यमकृत्यमित्यनादृत्य–(वाक्यमकृत्यं कर्तुमनुचितमिति अनादृत्य अस्वीकृत्य) बात मानने योग्य नहीं है, ऐसा सोचकर उसका अनादर करके ।

योद्धुमनसाम्–(युद्धाभिलाषिणाम्, युद्धकामानाम् 'तुं काममनसोरपि' इत्यनुस्वारलोपः) युद्ध के इच्छुकों के।

अवरोधान्...निवेशयामासुः–(अवरोधान् अन्तःपुरस्त्रीः, मूलबलरक्षितान्-मूलबलेन प्रधानसैन्येन संरक्षिताः, निवेशयामासुः-स्थापितवन्तः) प्रधान सैनिकों के संरक्षण में सुरक्षित अन्तःपुर की राजरमणियों को रखवा दिया।

प्रशस्तवीतदैन्यसैन्यसमेतः—(प्रशस्तम् उत्कृष्टं च तद् वीतदैन्यम् अकातरं च यत् सैन्यं बलं तेन समेतः) प्रशस्त तथा पराक्रमी सैनिकों के साथ।

द्विषं रुरोध–(शत्रुमरौत्सीत्) शत्रु को घेर लिया।

पुष्पपुरमध्यतिष्ठत्–(अधि + स्था + कर्त्तरि लुङ्, अधिष्ठितवान्) पुष्पपुर का राजा बनकर बैठ गया।

रमणानुगमने–(रमणः पतिस्तस्यानुगमने मरण इति) राजा की मृत्यु पर सती हो जाने के लिये।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित वाक्यों से गद्यकार दण्डी की शैली के संबन्ध में आप क्या समझते हैं?

(क) तीव्रगत्या निर्गत्याधिकरुषं द्विषं रुरोध।

(ख) अमात्या राजानं समन्तादन्वीक्ष्यानवलोकितवन्तो दैन्यवन्तो देवीमवापुः।

(ग) कल्याणि, भूरमणमरणमनिश्चितम्।

(पृष्ठ ५)

क्षणहीनया–(क्षणः उत्सवः तेन हीनया) बिना किसी प्रसन्नता के।

अस्थायि–(स्था + भावे लुङ्, स्थितम्) बैठ गई।

मृतिसाधनम्–(मृतेः मरणस्य साधनम्) मृत्यु के उपायभूत।

लावण्योपमितपुष्पसायक–(लावण्येनोपमितः पुष्पसायको मदनो येन तत्सम्बुद्धौ) सुन्दरता में कामदेव के समान! (सम्बोधन)

अमन्दहृदयानंन्दसम्फुल्लवदनारविन्दा-(अमन्दः यः हृदयानन्दः तेन सम्फुल्लं सम्यग् विकसितं प्रसन्नं वदनारविन्दं मुखकमलं यस्याः सा) अत्यधिक हार्दिक प्रसन्नता से खिले मुखकमल वाली।

विकस्वरेण स्वरेण-(अतिस्पष्टेन स्वरेण) अत्यन्त स्पष्ट स्वर में।

रथ्यचयः-(रथ्यानामश्वानां चयः समुदायः) अश्वसमूह।

सारथ्यपगमे-(सारथेः अपगमे विनाशे) सारथि के मर जाने पर।

निहतसैनिकग्रामे-(निहतः निःशेषं हतः सैनिकग्रामः योधसमूहो यत्र) जिसमें सभी सैनिक मारे जा चुके थे, ऐसे संग्राम में।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिये—

वल्लभः, विकस्वरः, रथ्यः, अरण्यम्।

(२) निम्नलिखित समस्त पदों के समास बताइये—

क्षणहीनया, ससम्भ्रमम्, निशान्तपवनः।

(पृष्ठ ६)

विरोपितव्रणः-(विरोपिताः चिकित्सिताः व्रणाः यस्यः सः) जिसके सभी घावों पर मरहम-पट्टी कर दी गई थी, ऐसा।

मत्या कलितया-(मत्या बुद्धया कलितया युक्तया) बुद्धिमती।

अवधार्यम्-(निश्चेतव्यम्) समझना चाहिये।

नियमवन्तम्-(व्रतिनम्, संयमिनं वा) संयमी।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित असमस्त पदों के समास कीजिये—

(क) विरोपिताः व्रणाः यस्य।

(ख) सकलं यत् रिपुकुलं तन्मर्दयतीति।

(२) निम्नलिखित पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

दैवायत्तम् , मितभाषी, उन्मूलयिष्यामि ।

(पृष्ठ ७)

तुलितवेधसम्–(तुलितः उपमितः सदृशीकृतः वेधा ब्रह्मा येन तम्) ब्रह्मा के समान ।

रसेन–(राजहंसं प्रति स्नेहेन) प्रेमपूर्वक ।

व्यक्तकार्पण्या–(व्यक्तं कार्पण्यं दैन्यं यस्याः सा) जिसकी दीनता स्पष्ट प्रतीत हो रही थी ।

सीमन्तिनीसीमन्तमहोत्सवाय–(सीमन्तिनी वधूः तस्याः सीमन्तमहोत्सवः गर्भिण्यवस्थायामनुष्ठातव्यस्य सीमन्तोन्नयनाख्यसंस्कारस्य उत्सवस्तदर्थे) वधू (मगधराज की रानी) के सीमन्तोन्नयन-संस्कार के समारोह के लिये ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित पदों का सविग्रह समास बतलाइए—

तुलितवेधसम् , व्यक्तकार्पण्या, लावण्यजितपुष्पसायके ।

(२) निम्नलिखित पदों में विभक्ति, लिङ्ग, वचन बतलाइए—

बालकेलीः, अश्रु, निजसुहृदः ।

(पृष्ठ ८)

संख्ये–(युद्धे) संग्राम में ।

साहाय्यकम्–(साहाय्यमेव साहाय्यकम् , स्वार्थे कप्) सहायता ।

कारुण्येन पुण्येन–(करुणया, स्वभाग्यबलेन च) उसकी कृपा और अपने भाग्य से ।

महानिरोधः–(महान् निरोधः रक्षार्थं स्वसैनिकैः कृतं परिवेष्टनं यस्य) अपने रक्षक सैनिकों से चारों ओर घिरा हुआ ।

—

उदग्रग्राविणि—(उद्गतानि अग्राणि यस्यैतादृशो यो ग्रावा तस्मिन्) नोकीली पथरीली भूमि पर ।

कपिलाशवस्य क्रोडम्—(कपिलायाः गोः शवः कुणपस्तस्य क्रोडमङ्कदेशम्) मरी गाय की गोद में ।

बाणासनयन्त्रमुक्तः—(बाणा अस्यन्ते क्षिप्यन्ते येन तद् बाणासनं धनुस्तदेव यन्त्रं तस्मान्मुक्तः प्रक्षिप्तः) धनुष द्वारा छोड़ा गया ।

वृष्णिपालेन—(मेषपालेन) भेड़िहारा द्वारा ।

उपतिष्ठासुः—(उपस्थातुमिच्छुः) समीप पहुँचने की इच्छुक ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित पदों के समासों का निर्देश कीजिये—

विवृतवदनः, मदीयपाणिभ्रष्टः, लोलालकः ।

(२) निम्नलिखित पदों के पर्यायवाचक शब्द लिखिये—

अक्षमे अभूव, आघ्रातुमागतवान्, क्रोडमभ्यलीयत ।

(पृष्ठ ६)

समभ्यभाष्यन्त—(उक्ताः) कहे गये ।

घोरप्रचारे—(घोरः भयङ्करः प्रचारः सञ्चारो यत्र तस्मिन्) जहाँ जाने में प्राणों का भय है ।

स्खलितपथः—(स्खलितः भ्रष्टः पन्थाः यस्य सः) मार्गभ्रष्ट, जिसका रास्ता भूल गया हो ।

स्थविरभूसुरः—(स्थविरश्चासौ भूसुरः) वृद्ध ब्राह्मण ।

किञ्चिदन्तरमगच्छम्—कुछ दूर चला ।

अभिरक्षतात्—(रक्षतु) रक्षा करें ।

पक्कणनिकटमार्गेण-(पक्कणः शबरालयः तस्य निकटमार्गेण समीपस्थवर्त्मना) -शबरों की बस्ती के पास वाले रास्ते से।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित क्रिया-पदों की धातुयें पहचानिए—

प्रागाम्, अदर्शि, व्यतरन्, अभिरक्षतात्, पुपोष।

(२) निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य लिखिए—

निपन्निमित्तम्, तदन्वयाङ्कुरम्, स्खलितपथः, दत्ताशीः।

(पृष्ठ १०)

व्यवर्धत-(वृद्धिं गतः) पाला-पोसा जाकर बड़ा हुआ।

(पृष्ठ ११)

व्यवहारी-(वाणिज्यकर्ता) व्यापारी।

उपयम्य-(विवाह्य) विवाह करके।

प्रवहणम्-(नावम्) नौका पर।

कल्लोलमालिकाभिहतः-(कल्लोलाः महातरङ्गाः तेषां मालिकाः परम्पराः ताभिरभिहतः ताडितः) एक के बाद एक उठती तरङ्गों की थपेड़ में पड़कर।

फलकम्-(काष्ठखण्डम्) लकड़ी का तख्ता।

विचेतना-(संज्ञारहिता) बेहोश पड़ी।

कण्ठीरवः-(केसरी) सिंह।

महाग्रहेण-(महता आवेशेन) बड़े वेग से।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित पदों का सविग्रह समास बतलाइए—

सुवस्तुसम्पदा, चपललोचनया, प्रच्छायशीतले।

(२) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए—व्यवहारी, फलकम्, महाग्रहेण।

(पृष्ठ १२)

निद्रामुद्रिताम्–(निद्रया मुद्रितां निमीलितनेत्राम्) नींद में आँखें बन्द कर पड़ी।

(पृष्ठ १३)

स्वक्षी–(शोभने अक्षिणी यस्याः सा) सुन्दर नेत्रों वाली।

अर्थपालम्–(अर्थपालनामानम्) अर्थपाल नामधारी।

निर्भर्त्सितमारमूर्तिम्–(निर्भर्त्सिता स्वरूपेण मारस्य कामस्य मूर्तिर्येन) कामदेव से भी अधिक सुन्दर।

अवगमय्य–(प्रापय्य, पुरतः संस्थाप्य) सामने रखकर।

तीर्थयात्रामिषेण–(तीर्थयात्रायाः मिषेण व्याजेन) तीर्थयात्रा के बहाने।

अग्रहारे–(नृपात् प्रतिग्रहेण प्राप्ते भूमिभागे ग्रामादौ वा) दान में मिले ग्राम में।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित समस्त पदों का समास-विग्रह कीजिए—
विस्मयविकसितनयनया, विस्मयमानमानसः, कुसुमसुकुमारम्, विलोकाकम।

(२) निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये—
(क) आचार्यस्य परिचर्याकरणाय…………।
(ख) निद्रामुद्रितोऽहं…………अवोचम्।

(पृष्ठ १४)

तटिन्याम्–(नद्याम्) नदी में।

कालभोगिना–(कालश्चासौ भोगी सर्पः तेन) कृष्ण सर्प द्वारा।

अदंशि–(कर्मणि लुङ्, दष्टा) काट खायी गयी।

उद्दीपनतया–(प्रबलतरतया) अधिक बढ़ जाने से।

व्युत्क्रान्तजीविताम्–(मृताम्) मरी हुई।

अधिरूढानेकवाहनः-(अधिरूढान्यनेकानि वाहनानि येन सः) नाना प्रकार की सवारियों पर चढ़ने में निपुण ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित पदों के समास बनाइये—

नद्याः वेगेन आगतस्य, दयया आविष्टं हृदयं यस्य, व्युत्क्रान्तं जीवितं यस्यास्ताम्, तस्य योऽनुजस्तस्य तनयस्तम् ।

(पृष्ठ १५)

चौलोपनयनादिसंस्कारजातम्-(चौलं चूडाकर्म चोपनयनञ्च चौलोपनयने, एते आदौ यस्य संस्कारजातस्य तम्) मुण्डन तथा उपनयन से प्रारम्भ किये जाने वाले सभी संस्कारों को ।

सकललिपिज्ञानम्-(सकला सर्वविधा लिपिः अक्षरसंस्थानं तस्य ज्ञानम्) अनेक लिपियों का परिचय ।

संगीतसाहित्यहारित्वम्-(संगीतसाहित्यादिभिः नृत्यगीतादिशिल्पकलाभिः मनोहारित्वम्) संगीत प्रभृति कलाओं के पाण्डित्य से लोकरञ्जन करने का सामर्थ्य ।

अविन्दत-(अलभत) प्राप्त किया ।

नुतमित्रः-(नुतानि स्तुतानि स्तुत्यानि वा मित्राणि येन यस्य वा सः) मित्रों का आदर करने वाला अथवा सच्चे मित्रों वाला ।

माराभिरामाः-(मारः कंदर्प इवाभिरामाः सुन्दराः) कामदेव के समान सुन्दर ।

रणाभियानेन-(रणमभियातीत्येतादृशेन) युद्धोन्मुख ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य बनाइए—

षडङ्गसहितवेदसमुदायकोविदत्वम्, काव्यनाटकाख्यानकाख्यायिकेतिहासचित्रकथासहितपुराणगणनैपुण्यम् ।

(२) निम्नलिखित वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन कीजिये—

(क) तारुण्यं भवत्पुत्रोऽनुभवति।

(ख) कुमारा यानेन राजानमभ्युदयाशंसमकार्षुः।

(पृष्ठ १६)

कालायसकर्कशकायम्–(कालायसं लोहं तदिव कर्कशः कठिनः कायो देहो यस्य तम्) लोहे की तरह कठोर शरीर वाले।

व्यक्तकिरातप्रभावम्–(व्यक्तः स्पष्टः किरातस्येव वनचरस्येव प्रभावो बलं यस्य तम्) किरात (जंगली आदमी) की भाँति बलिष्ठ।

भवदंसोपनीतम्–(भवतः अंसः भुजशिरस्तत्र उपनीतं प्राप्तम्) कंधे पर पड़े।

हेतिहतिभिः–(शस्त्रप्रहारचिह्नैः) शस्त्रों की चोटों के चिह्नों से।

मानुषमात्रपौरुषः–(मानुषमात्रं मनुष्यप्रमाणं पौरुषं पराक्रमो यस्य सः, 'प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः' इति सूत्रेण प्रमाणार्थे मात्रच्प्रत्ययः) मनुष्य के पराक्रम वाला।

नामजनने–(नाम च जननञ्च ते) नाम और वंश।

ब्राह्मणब्रुवाः–(ब्राह्मणाधमाः, कुत्सनार्थे 'ब्रुव' पदम्) अपने आप को ब्राह्मण कहने वाले, किन्तु जो वस्तुतः ब्राह्मण नहीं हैं, क्योंकि वे ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न होने पर भी ब्राह्मण का काम नहीं करते।

निन्दापात्रचारित्रः–(निन्दापात्रं चारित्रं यस्य सः) निन्दनीय आचरण वाला।

वीतदयः–(वीता दया यस्य सः) निर्दय।

दयायत्तचित्तः–(दयया आयत्तं चित्तं यस्य सः) दया के वशीभूत हृदय वाला।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित संदर्भ का हिन्दी-अनुवाद लिखिये—

(क) 'तेजोमयोऽयम्'' 'न हन्तव्यो ब्राह्मण इति।'

(ख) निम्न पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

नामजनने, निन्दापात्रचारित्रः, वीतदयः, जिघांस्यमानम्।

(२) निम्नलिखित वाक्यों का अभिप्राय अपने वाक्यों द्वारा प्रकाशित कीजिये—

(क) हेतिहतिभिः किरातरीतिरनुमीयते।

(ख) तेजोमयोऽयं मानुषमात्रपौरुषो नूनं न भवति।

(पृष्ठ १७)

शमनम्–(यमराजम्) यमराज को।

दण्डप्रणामम्–(दण्डवत् भूमौ शयित्वा प्रणामम्) साष्टाङ्ग प्रणाम।

विगलितकल्मषस्य–(विगलितं नष्टं कल्मषं पापं यस्य तस्य) जिसके पाप नष्ट हो चुके हैं।

ज्ञानेक्षणगम्यमानस्य–[ज्ञानमेवेक्षणं (न चर्मचक्षुः) तेन गम्यमानः :घ्य-स्तस्य] ज्ञानदृष्टि से ही प्राप्य।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन कीजिये—

(क) पूर्वशरीरमनेन गम्यताम्।

(ख) मदीयवंशबन्धुगणः मामपक्रान्तव्रणमकरोत्।

(२) निम्नलिखित पदों में सन्धिविच्छेद कीजिए—

तैरभिहतः, नैषोऽमुष्य, रुचिरुदेष्यति, पुनरपि।

(पृष्ठ १८)

दण्डकारण्यान्तरालगामिन्याः–(दण्डकारण्यस्य अन्तराले मध्ये गामिन्या गमनशीलायाः) दण्डकारण्य के बीचोंबीच बहने वाली।

विधेराननमिव–(चतुर्मुखस्य ब्रह्मणो मुखमिव) चतुर्मुख ब्रह्मा के मुख की भाँति (चौकोर)।

दिष्टविजयमिव-(दिष्टस्य भाग्यस्य विजयमिव) भाग्य द्वारा प्राप्त विजय की भाँति ।

नमितोत्तमाङ्गेन-(नमितमुत्तमाङ्गं शिरो येन तेन) प्रणाम के लिये नतमस्तक ।

कल्ये-(प्रभाते, 'प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यम्') प्रातःकाल ।

एतदन्वेषणमनीषया-(एतस्य राजवाहनस्य अन्वेषणमनुसन्धानं तस्य मनीषया बुद्धया) राजकुमार की खोज करने के लिये ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित सन्दर्भ का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये—

'मातङ्ग, दण्डकारण्या'·····समागमिष्यति' इति ।

(२) निम्नलिखित क्रियापदों की धातुओं के 'लट्' लकार के रूप लिखिये—

निरगात्, अवोचत् , अभूत् , रचय ।

(पृष्ठ १६)

शशिशेखरकथिताभिज्ञानपरिज्ञातम्-(शशिशेखरेण शिवेन कथितं यदभिज्ञानं चिह्नं तस्मात् परिज्ञातं सम्यगवगतम्) भगवान् शिव द्वारा बताये गये चिह्न से पहचाने हुए ।

समिदाज्यसमुज्ज्वलिते-(समिधश्च आज्यं घृतं च तैः समुज्ज्वलिते) समिधाओं और घृत से प्रज्वलित ।

पुण्यगेहम्-(पुण्यस्य गेहं निवासस्थानभूतम्) पुण्य की निवासभूमि ।

सकललोकललनाकुलललामभूतकन्यका-(सकललोकस्य समस्तसंसारस्य ललनाकुलेषु रमणीवृन्देषु ललामभूता भूषणभूता या कन्यका सा) समस्त संसार की रमणियों में सर्वश्रेष्ठ कन्या ।

उपायनीकृत्य-(उपायनमुपहारं दत्त्वा) उपहार-रूप में देकर ।

उदञ्जलिः-(ऊर्ध्वाञ्जलिः) जुड़े हुए हाथ ऊपर उठाए।

यमनगरातिथिरकारि-(यमनगरस्य यमालयस्यातिथिरभ्यागतः कृतः) यमपुरी का अतिथि बना डाला अर्थात् मार डाला।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

चरिष्णवः, उपायनीकृत्य, उदञ्जलिः, कारुणिकः।

(२) निम्न सन्दर्भ का हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

'लोकैकवीरेण''तनुमलभत।'

(पृष्ठ २०)

मन्मनोरथफलायमानम्-(मम यो मनोरथः अभिलाषस्तस्य फलं तद्वदाचरतीति तत्) मेरे मनोरथ के फलस्वरूप।

मदनकृतसारथ्येन-(मदनेन कृतं सारथ्यं सारथिकर्म यस्य तेन) काम द्वारा प्रेरित।

उररीकृत्य-(स्वीकृत्य) स्वीकार करके।

क्षुत्पिपासादिक्लेशनाशनम्-भूख और प्यास आदि कष्टों का निवारण करने वाले।

विशालोपशल्ये-(विशालायाः पुर्याः उपशल्यं ग्रामान्तं तस्मिन्) विशाला नगरी की सीमा पर।

विशश्रमिषुः-(विश्रमितुमिच्छुः) विश्राम करने का इच्छुक।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्न लिखितवाक्य के प्रत्येक पद में कारक-विभक्तियाँ आदि बतलाइये—

ससम्भ्रममान्दोलिकाया अवतीर्य चरणकमलयुगलं मौलिना पस्पर्श।

(पृष्ठ २१)

अम्बरमणेः-(सूर्यस्य) सूर्य के ।

स्थविरमहीसुरम्-वृद्ध ब्राह्मण को ।

कुशलमुदितदयोऽहमपृच्छम्-(कुशलम्+उदितदयः+अहम्+ अपृच्छम्) मुझे दया आयी और मैंने उससे कुशल-समाचार पूछा ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित समस्त पदों का समास-विग्रह कीजिये—

आत्मीयप्रचारप्रकारम्, भवच्चरणकमलसेवाभिलाषीभूतः, स्थविरमहीसुरम् ।

(२) निम्नलिखित पदों में सन्धि-विच्छेद कीजिये—

(क) अम्बरमणेरत्युष्णतया ।

(ख) अवोचदग्रजन्मा ।

(ग) कटकाधिपती राजा ।

(पृष्ठ २२)

अवधूतदुहितृप्रार्थनस्य-(अवधूता तिरस्कृता दुहितुः कन्याया वामलोचनायाः लाटेश्वरकृता प्रार्थना येन तस्य) जिसने राजकुमारी वामलोचना से विवाह करने की लाटदेश के राजा की प्रार्थना ठुकरा दी थी, उसकी ।

अरौत्सीत्-(अभियुयोज) घेर लिया ।

कन्यासारेण-(कन्या एव सारो धनं यस्य तेन वीरकेतुनेत्यर्थः) जिसके पास राजकुमारी को छोड़ और कुछ भी न बच रहा था ऐसे राजा वीरकेतु के द्वारा ।

अभिहितानेकाशीः-(अभिहिता उक्ताः दत्ता वा अनेका असंख्या आशिष आशीर्वादा येन सः) बहुत से आशीर्वाद देकर ।

निरवेशि निद्रासुखम्-(सुखमस्वपम्) बड़े आनन्द से सोया ।

पश्चान्निगडितबाहुयुगलः-(पश्चात् पृष्ठदेशे निगडितं बद्धं बाहुयुगलं यस्य सः) जिसके दोनों हाथ ऐंठकर पीछे बाँध दिये गये हैं ।

कशाघातचिह्नितगात्रः- (कशायाः कशया वा घात आघातो वा ताडनं तेन चिह्नितं गात्रं यस्य सः) जिसकी देह पर चाबुक की मार के चिह्न पड़े हैं ।

नैस्त्रिंशिकानुयातः-(नैस्त्रिंशिकाः खड्गधारिणः तैरनुयातः अनुसृतः) जिसके पीछे हाथ में तलवार लिये पहरे के सैनिक चल रहे हैं ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नाङ्कित वाक्यों का वाच्यपरिवर्त्तन कीजिए—

(क) लाटेश्वरः तस्य नगरीमरौत्सीत् ।

(ख) मया तत्र निरवेशि निद्रासुखम् ।

(२) निम्नलिखित पदों में सविग्रह समास कीजिए—

निजनाथावमानखिन्नमानसः, परमाह्लादविकसिताननः, अध्वश्रमखिन्नेन ।

(पृष्ठ २३)

निराशक्लेशानुभवेन-(निराशस्य यः क्लेशस्तस्यानुभवो यस्य तेन) निराश मनुष्य के क्लेशों का अनुभव करने वाले ।

पदान्वेषिणः-(चरणचिह्नमनुसरन्तः) पैरों के चिह्न से पता लगाने वाले ।

समस्तवस्तुशोधनवेलायाम्-(समस्तवस्तूनां शोधनवेलायां परीक्षणकाले अन्वेषणसमये वा) सब चोरी गई चीजों की ठीक-ठीक जाँच-पड़ताल के समय ।

अशृङ्खलयन्-(शृङ्खलितानकुर्वन्) जंजीर से बाँध दिया ।

युष्मदन्वेषणपर्यटनप्रकारम्-(युष्माकं राजवाहनादीनामन्वेषणाय पर्यटनस्य भ्रमणस्य यः प्रकारस्तम्) आपकी खोज में पर्यटन करने के ढंग ।

पटुपराक्रमलीलया-(महता स्वपराक्रमेण) अपने पराक्रम के बल पर ।

अभिद्राव्य-(प्रपलाय्य, दूरमपवाह्य) भगाकर ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित सन्दर्भ का हिन्दी अनुवाद कीजिये—

'चोरवीराः पुनरवोचन्'...... किलाश्रृङ्खलयन्' इति ।

(२) निम्न पदों के पर्यायवाचक शब्द लिखिये और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिये-

निर्विशथ, अश्रृङ्खलयन्, प्राविशम् ।

(पृष्ठ २४)

कटकम्-(सैन्यशिबिरम्) सेना के शिबिर ।

रोषारुणितनेत्रः-(रोषेण क्रोधेन अरुणिते रक्ते नेत्रे नयने यस्य सः) क्रोध से आँखें लाल किये हुये ।

वराकस्य-(नीचस्य) नीच की (सेवा से) ।

सन्नद्धयोधः-(सन्नद्धा युद्धाय सज्जिता योधा भटाः यस्य सः) संग्राम के लिये पहले से तैयार योद्धाओं के साथ ।

समुल्लसद्भुजाटोपेन-(समुल्लसतोः भ्राजमानयोर्भुजयोर्बाह्वोराटोपेन गर्वेण) अपने भुजबल के अभिमान से ।

सम्भावनाम्-(सत्कारम्) आदर-सत्कार ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित क्रियापदों की धातुओं के 'लिट्' लकार के रूप लिखिये—

आर्चयत, प्राविशन्, अभ्यगात, प्राहरम् ।

(२) निम्नलिखित पदों के पर्यायवाचक पद लिखिये—

कृतरणनिश्चयः, मदीयबलविश्वासेन, तुमुलसङ्गरकरम् ।

(पृष्ठ २५)

विस्मयमानः—(आश्चर्यमनुभवन्) आश्चर्य में पड़े हुए ।

भवद्विरहवेदनाशल्यसुलभवैकल्यहृदयः—(भवतो विरहस्य वेदना एव शल्यानि तेभ्यः सुलभं वैकल्यं यस्य तादृक् हृदयं यस्य सः) आपके वियोग-दुःख के काँटों से व्यथितहृदय होकर ।

त्वत्पदारविन्दसन्दर्शनानन्दसन्दोहः—(तव पदारविन्दयोश्चरणकमलयोः सन्दर्शनेन य आनन्दस्तस्य सन्दोहोऽतिशयो यस्य सः) आपके चरणकमलों के दर्शन से अत्यधिक आनन्द में फूला हुआ ।

अभिनन्दितपराक्रमः—(अभिनन्दितः प्रशंसितः पराक्रमो विक्रमो येन सः) प्रशंसित पराक्रम वाले ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) चिह्नित पदों में कौन-सी विभक्तियाँ हैं और क्यों हैं—

निजतनयां मह्यमदात् । निद्रितान् भवनः परित्यज्य निरगाम् ।

(२) निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य लिखिये—

आराधितमहीपालचित्तः, सुहृज्जनावलोकनफलम्, सादरहासम् ।

(पृष्ठ २६)

ललाटतटचुम्बदञ्जलिपुटः—(ललाटतटं चुम्बदञ्जलिपुटं यस्य सः) मस्तक से हाथ जोड़े हुये ।

दिनमध्यसङ्कुचितसर्वावयवाम्—(दिनमध्ये मध्याह्ने सङ्कुचिताः सर्वेऽवयवा यस्यास्ताम्) मध्याह्न में जिसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग धूप से सिकुड़ गये हैं ।

दूरापातवीतसंज्ञम्—(दूरात् दूरदेशात् आपातः परिपतनं तेन वीता गता संज्ञा चेतना यस्य तम्) दूर से गिरने के कारण बेहोश ।

भृगुपतनकारणम्-(भृगोः प्रपातात् पतनस्य कारणम्) पहाड़ से नीचे कूदने का कारण।

अश्रुकणान्-(नेत्रजलबिन्दून्) आँसू।

वाणिज्यरूपेण-(वाणिज्याभिलाषेण) रोजगार के सिलसिले में।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित पदों के पर्यायों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

सविनयम्, प्रच्छायशीतले, दयोपनतहृदयः।

(२) निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य-परिवर्तन कीजिये—

(क) भवानेकाकी कुत्र गतः ?

(ख) सोऽश्रुकणानपनयन्नभाषत।

(पृष्ठ २७)

हायनानि-(वत्सरान्) साल, वर्ष।

नारीकूजितम्-(स्त्रीक्रन्दितम्) स्त्री का आर्त विलाप।

मनोविदितजनकभावम्-(मनसा मदीयेनैव चित्तेन विदितो ज्ञातो जनकभावो पितृत्वं यस्य तम्) मन ही मन जिसे अपना पिता समझ लिया।

भयङ्करज्वालाकुलहुतभुगवगाहनसाहसिकाम्-(भयङ्करज्वालाभिराकुले हुतभुजि वह्नौ अवगाहने प्रवेशे साहसिकां कृतसाहसाम्) भीषण ज्वालाओं से धधकती आग में कूद पड़ने को तैयार।

अभिगमय्य-(प्रापय्य) पहुँचा कर।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित पदों में धातुएँ बताइए—

नीत्वा, अनवेक्षमाणः, अश्रावि, विशसि, अवादिषम्, स्थीयताम्।

(पृष्ठ २८)

फलकम्–(काष्ठखण्डम्) तख्ता ।

वनमातङ्गेन–(आरण्यगजेन) जंगली हाथी द्वारा ।

आहुतीकर्तुम्–(भस्मसात्कर्तुम्) जलाकर राख कर देने के लिये ।

धात्रीभाषणफुल्लवदनम्–(धात्र्याः भाषणेन वचनश्रवणेन फुल्लं विकसितं वदनं मुखं यस्य तम्) धाय की बातें सुनकर प्रसन्नता से खिले मुख वाले ।

विस्मयविकसिताक्षम्–(विस्मयेन आश्चर्यरसेन विकसिते उत्फुल्ले अक्षिणी नेत्रे यस्य तम्) विस्मय से विकसित नेत्र वाले ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित समस्त पदों में समास बतलाइये—

आसन्नप्रसवसमया, सिद्धवाक्यविश्वासात्, विस्मयविकसिताक्षम् ।

(२) निम्नलिखित पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

दैवयोगेन, आख्याय, अन्योन्यम्, साभिज्ञानम्, उपाघ्राय ।

(पृष्ठ २९)

अभ्यधाम्–(अकथयम्) कह सुनाया ।

पुरातनपत्तनस्थानानि–(प्राचीननगरभूमीः) पुराने नगरों के खंडहर ।

सिद्धाञ्जनेन–(सिद्धादिष्टेन दत्तेन वा अञ्जनेन) सिद्ध-महात्मा द्वारा दिये गये अञ्जन के बल पर ।

दीनारान्–(स्वर्णमुद्राः) अशर्फियाँ ।

वणिक्कटकम्–(वणिक्समाजम्) व्यापारियों के झुण्ड ।

गोणीः–(धान्यादिवहनाय पात्रविशेषान्) खारी ।

अन्यद्रव्यमिषेण–(अन्यद्रव्यमिति कथयित्वा) दूसरी चीजें हैं ऐसा कह कर ।

तज्जपितामृताश्वासितहृदयः-(तस्य बन्धुपालस्य लपितं भाषितमेवामृतं तेना-श्वासितं निर्वृतं हृदयं यस्य सः) उसकी अमृत सरीखी बातों से आश्वस्तचित्त होकर।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्न क्रियापदों की व्युत्पत्ति बतलाइये—

अस्थापयम्, अनयम्, तिष्ठतु।

(२) निम्न शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

उपाविशम्, अकरवम्, अवदत्।

(पृष्ठ ३०)

लतान्तबाणबाणलक्ष्यताम्-(लतान्ताः बाणा यस्य स लतान्तबाणः कामः तस्य बाणास्तेषां लक्ष्यतां शरव्यत्वम्) कामदेव के बाणों का लक्ष्य।

चतुरगूढचेष्टाभिः-(चतुराः पेशला गूढा गुप्ताश्च याश्चेष्टाः कटाक्षा-दयस्ताभिः) चतुराई और गुप्त चेष्टाओं से।

उत्कलिकाविनोदपरायणः-उत्कलिकाया उत्कण्ठायाः विनोदेऽपनयने परा-यणस्तत्परः) मन की उत्कण्ठा की शान्ति के लिये प्रयत्नशील।

निजपैतृष्वस्रेयौ-अपने फुफेरे दोनों भाइयों।

राजराजगिरिम्-(राजराजः कुबेरस्तस्य गिरिः कैलासस्तम्) कैलासपर्वत।

असपत्नम्-(निःशत्रु, निष्कण्टकम्) शत्रुरहित।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित सन्दर्भ का हिन्दी अनुवाद कीजिये—

'सौम्य, मानसारो'''राजराजगिरिमभ्यगात्'।

(पृष्ठ ३१)

पारदार्यपरद्रव्यापहरणादि–(पारदार्यं परस्त्रीगमनं परद्रव्यापहरणं चौर्यं ते आदौ यस्य तत्) परस्त्रीगमन तथा परद्रव्यापहरण आदि ।

किञ्चिदुत्फुल्लसरसिजानना–(किञ्चिदुत्फुल्लमीषद्विकसितं सरसिजमिवाननं यस्याः सा) कुछ खिले हुए कमल-जैसे मुख वाली ।

असकृद्विवृत्तवदना–(असकृत् पुनः पुनः विवृत्तं परावृत्तं वदनं यया सा) बार-बार मेरी ओर मुँह करके ।

मन्मायोपायवागुरापाशलग्नेन–(मम मायया कपटेन य उपायः स एव वागुरापाशो बन्धनरज्जुस्तत्र लग्नो बद्धस्तेन) मेरे कपटपूर्ण उपायरूप रस्सी में बँधे ।

वनितायोग्यम्–स्त्रियोचित ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित वाक्यों का वाच्यपरिवर्त्तन कीजिए—

(क) मृदुरुपायः कश्चिन्मया चिन्त्यते ।

(ख) बन्धुपालः मां विससर्ज ।

(२) निम्नलिखित पदों के पर्याय लिखिए—

रागोद्रेकम् , मृदुरुपायः, मण्डनजातम् ।

(पृष्ठ ३२)

तदागारद्वारोपान्तम्–(तस्य दारुवर्मण आगारद्वारस्य गृहद्वारस्य उपान्तं समीपम्) उसके घर के दरवाजे के पास ।

द्वाःस्थकथितास्मदागमनेन–(द्वाःस्थैर्द्वारपालैः कथितं विज्ञापितमस्माकमागमनं यस्मै तेन) जिसे दरवानों के द्वारा मेरे आगमन की बात का पता चल चुका था।

तमिस्रासम्यगनवलोकितपुंभावाय–(तमिस्रायां तामस्यां रात्रौ सम्यक्

स्पष्टमनवलोकितः पुंभावः पुरुषभावो यस्य तस्मै) रात के अन्धकार में मुझे यह न पहचान कर कि मैं पुरुष हूँ ।

चामीकरमणिमयमण्डनानि–(सुवर्णरत्ननिर्मितानि भूषणानि) स्वर्ण और रत्नजटित आभूषण ।

नियुद्धरभसविकलम्–(नियुद्धस्य बाहुयुद्धस्य रभसेन वेगेन विकलंविपर्यस्तम्) हाथापाई के कारण अस्तव्यस्त ।

मेलयित्वा–यथास्थान निवेश करके ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित चिह्नित पदों में कौन-सी विभक्तियाँ हैं और क्यों हैं, लिखिए—

(क) मह्यं मनोरमस्त्रीवेषाय सूक्ष्माणि वस्त्राणि समर्प्य संलपन्नतिष्ठत् ।

(ख) बालचन्द्रिकामधिष्ठितं यक्षं बलवन्तं शृण्वन्नपि दारुवर्मा तामेवायाचत ।

(२) निम्नलिखित पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

विवेकशून्यमतिः, मुहूर्तद्वयमात्रम्, साध्वसकम्पितः ।

(पृष्ठ ३३)

नेत्रोत्सवकारि–नयनानन्दजनक ।

अम्लानमानसः–(अम्लानं स्वच्छं मानसं मनो यस्यासौ) प्रफुल्ल-हृदय ।

सहकारकिसलयमकरन्दास्वादनरक्तकण्ठानाम्–(सहकाराणामाम्रवृक्षाणां किसलयमकरन्दस्य मञ्जरीरसस्य आस्वादनेन कवलनेन रक्तः मधुरस्वरपूर्णः कण्ठो येषाम् तेषाम्) आम की कोमल मञ्जरियों के रसास्वादन से मधुर कण्ठ वाले ।

काकलीकलकलेन–(काकली मधुरास्फुटध्वनिः तस्याः कलकलेन कोलाहलेन) मधुर ध्वनियों से ।

वाचालयन्–(मुखरयन्) शब्दायमान बनाते हुये ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्न सन्दर्भ का हिन्दी-अनुवाद कीजिये—

'अथ सहकार.........समाजगाम ।'

(पृष्ठ ३४)

पौरसुन्दरीसमवायसमन्विता-(पौराश्च ताः सुन्दर्यश्च तासां समवायेन समूहेन समन्विता) नगर की नारियों के झुंड के साथ ।

परिमलद्रव्यनिकरेण-(सुगन्धिद्रव्यसमूहेन) सुगन्धित सामग्रियों से ।

मनोभवम्-(कामदेवम्) कामदेव ।

रतिप्रतिकृतिम्-(रतिरमणीयाम्) रति की भाँति सुन्दर ।

निजतेजोनिर्जितपुरुहूतः-(निजतेजसा स्वप्रतापेन निर्जितः पुरुहूत इन्द्रो येन सः) अपने तेज से इन्द्र को भी नीचा दिखाने वाले ।

अनन्यसाधारणसौन्दर्येण-(अनन्यसाधारणमद्वितीयं सौन्दर्यं यस्य तेन) असाधारण सौन्दर्य वाले ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्न पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उपपादयन्, समुल्लासयन्, द्रष्टुकामः, अवाप ।

(पृष्ठ ३५)

देवतासान्निध्यकरणः-(देवतानां सान्निध्यं साक्षात्कारं करोतीति) देवों का साक्षात्कार करने में निपुण ।

आहवनिपुणः-(युद्धकुशलः) युद्ध में चतुर ।

जातिस्मरत्वम्-(पूर्वजन्मस्मरणम्) पूर्वजन्म की बातों की स्मृति ।

केलीविधित्सया-(केलीं विधातुमिच्छया) क्रीडा करने की इच्छा से ।

रहस्यनिर्भेदभिया-(रहस्यं निर्भिंद्येतेति शङ्कया) रहस्य खुल जानेके डर से ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य बतलाइये—

सकलकलाप्रवीणः, मणिमन्त्रौषधिज्ञः, शापावसानसमये।

(२) निम्न क्रियापदों की धातुओं के 'लृट्' लकार के रूप लिखिये—

करोमि, अचिन्तयत्, अगमत्, अवाप।

(पृष्ठ ३६)

वृक्षवाटिकान्तरितगात्रमकरोत्–(वृक्षवाटिकायां गृहोद्याने अन्तरितं गोपित गात्रं शरीरं यस्य तथाभूतम् अकरोत् कृतवान्) पेड़ों की झुरमुट में छिपा दिया।

सूक्ष्मचित्रनिवसनः–(सूक्ष्मं श्लक्ष्णं चित्रं विविधवर्णं निवसनं वासो यस्य सः) महीन तथा रंगीन कपड़े पहने।

मुण्डितमस्तकमानवसमेतः–(मुण्डितं मस्तकं यस्य तादृशेन अपरेण मानवेन समेतो युक्तः) सिर मुँड़ाये हुए एक दूसरे मनुष्य के साथ।

ऐन्द्रजालिकविद्याकोविदः–बाजीगरी अथवा जादूगरी में निपुण।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिये—

(क) बालचन्द्रिकया राजवाहनः कुतः वृक्षवाटिकान्तरितगात्रोऽकारि ?

(ख) किंरूपः ब्राह्मणः राजवाहनमाशीर्वादपूर्वकं ददर्श ?

(२) निम्नलिखित समस्त पदों के समासों का निर्देश कीजिये—

वृक्षवाटिकान्तरितगात्रः, स्फुरन्मणिकुण्डलमण्डितः, चतुरवेषमनोरमः।

(पृष्ठ ३७)

अन्योन्यानुरागातिरेकः–(परस्परप्रेमातिशयः) अत्यधिक पारस्परिक अनुराग।

लज्जाभिरामम्–(लज्जया अभिरामम्, मनोज्ञदर्शनम्) लज्जा से सुन्दर।

अनिमित्तम्—निष्कारण ।

क्रियापाटवेन—(कार्यकौशलेन) कार्यकौशल से ।

वेदयित्वा—(ज्ञापयित्वा) बताकर ।

क्षपां क्षपयामि—रात बिताऊँ ।

रसभावरीतिगतिचतुरः—(रसाः शृङ्गारादयः, भावाः अभिप्रायादयः, रीतिगतयः इन्द्रजालक्रियाः तत्र चतुरः) रस, भाव, रीति आदि में चतुर ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित वाक्य का वाच्यपरिवर्तन कीजिए—

'सन्तुष्टमना महीपतिः तं विद्येश्वरं सबहुमानं विससर्ज ।'

(पृष्ठ ३८)

समुत्सुकावरोधसहितेन—(समुत्सुकः द्रष्टुमुत्कण्ठितोऽवरोधः अन्तःपुरिकाजनः तेन सहितेन) बाजीगरी का खेल देखने के लिये उत्सुक अन्तःपुर की रानियों आदि के साथ ।

समधिकरागरञ्जितसामाजिकमनोवृत्तिषु—(समधिकेनातिशयितेन रागेण रञ्जिता आकृष्टा सामाजिकानां सभ्यानां मनोवृत्तिर्यैस्तेषु—पिच्छिकाभ्रमणेषु) इस प्रकार मोरछल घुमाये जाने लगे जिससे दर्शकों की चित्तवृत्ति आकृष्ट हो जाय ।

परिवारं परिवृत्तं भ्रामयन्—अपने साथियों को चारों ओर घुमाते हुये ।

फणालङ्करणाः—(फणाः फटा अलङ्करणं भूषणं येषां ते) फण वाले ।

भोगिनः—(सर्पाः) साँप ।

नरसिंहस्य हिरण्यकशिपोर्दैत्येश्वरस्य विदारणमभिनीय—नरसिंह भगवान् के द्वारा दैत्यराज हिरण्यकशिपु की छाती फाड़ने का अभिनय करके ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित सन्दर्भ का हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

'ऐन्द्रजालिकः समागतः·········क्षणमतिष्ठत्'।

(२) निम्नलिखित समस्त पदों में समास बतलाइये—

महाश्चर्यान्वितम्, कल्याणपरम्परावाप्तये, निखिललक्षणोपेतस्य, तदवलोकनकुतूहलेन।

(पृष्ठ ३६)

मायामानवाः–(इन्द्रजालपुरुषाः) बाजीगरी के बल पर दिखाई पड़ने वाले लोग।

तदनुलापपीयूषपानलोलः–(तस्या अनुलाप एव पीयूषममृतं तस्य पाने सानुरागं श्रवणे लोलश्चञ्चलः) उसकी अमृत सरीखी मीठी बातों के सुनने में उत्सुक।

प्रियवयस्यगणानुयुक्तः–(प्रियवयस्यगणेन अनुयुक्तः पृष्टः) प्रियमित्रजन के द्वारा पूछे जाने पर।

असुरविवरम्–पाताल।

अमुतः–(अदस्शब्दात् पञ्चम्यास्तसिल्।) इससे।

बुभुत्सुस्त्वद्वृतिम्–(बुभुत्सुः बोद्धुं ज्ञातुमिच्छुः, त्वद्वृतिं भवत्प्रचारम्) आपका समाचार जानने के लिये।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित क्रियापदों की धातुओं के 'लट्' लकार के रूप लिखिये—

विवेश, जगाम, ययौ, श्रावयामास।

(पृष्ठ ४०)

न्यशामयम्–(अपश्यम्) देखा।

उद्विग्नवर्णम्–(पश्चात्तापमलीमसम्) अफसोस में पड़े।

आश्चर्यज्ञानविभवः–(आश्चर्यजनको ज्ञानविभवो यस्य) आश्चर्यजनक ज्ञान-सम्पत्ति वाले।

सानुक्रोशम्–(सशोकम्) बड़े दुःख से व्याकुल होकर।

अविच्छिन्नपातमपतत्–(पुनः पुनः निपत्य अपतत्) बार-बार गिरने-पड़ने लगा।

आमुष्मिकाय–(अमुष्मिन् जातमामुष्मिकं पारलौकिकं तस्मै) पारलौकिक।

श्वोवसीयाय–(कल्याणाय) मङ्गल के लिये।

आर्त्ताभ्युपपत्तिवित्तयोः–(आर्तानां पीडितानामभ्युपपत्त्या अनुग्रहेण वित्तयोः ख्यातयोः सर्वत्र प्रसिद्धयोरिति) दुखी जनों पर कृपा करने के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित वाक्य का अर्थ अपनी संस्कृत में प्रकाशित कीजिये—

'न्यशामयं च तस्मिन्नाश्रमे कस्यचिच्चूतपोतकस्य छायायां कमप्युद्विग्नवर्णं तापसम्।'

(पृष्ठ ४१)

अशक्यारम्भात्–(असाध्यकर्मारम्भात्) असाध्य कर्म के आरम्भ से।

हिरण्यरेताः–(अग्निः) अग्निदेव।

उद्मनायत–(उन्मना इव बभूव) विलखने लगी।

अनुविमृश्य–(सुष्ठु विचिन्त्य) भली-भाँति सोच-विचार कर।

त्रिवर्गसम्बन्धिनीभिः–(धर्मार्थकामविषयाभिः) धर्म-अर्थ-काम से सम्बद्ध।

अन्वरञ्जयत्–(सन्तोषयामास) मोहित कर लिया।

प्रासजत्–(आसक्तोऽभवत्) आसक्त हो गया।

उदारशोभया—(प्रशस्तसौन्दर्यशालिन्या) अत्यधिक सुन्दर।

स्नातानुलिप्तम्—(पूर्वं स्नातः पश्चादनुलिप्तस्तम्) स्नान करके सुगन्धित तेल लगाये।

आरचितमञ्जुमालम्—(आरचिता मञ्जुमाला येन तम्) सुन्दर माला पहने।

आरब्धकामिजनवृत्तम्—(आरब्धं प्रक्रान्तं कामिजनस्य विलासिनो वृत्तमाचरणं येन तम्) कामी लोगों के समान व्यवहार करते।

निवृत्तस्ववृत्ताभिलाषम्—(निवृत्तः अपगतः स्ववृत्तस्य निजाचारस्य तपोऽनुष्ठानादेरभिलाषो यस्य तम्) अपने ऋषिजीवन को भूले।

दूयमानम्—खिन्न, दुखी।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

भूयोभूयः, अल्पीयसैव कालेन, उत्तरेषुः, दूयमानम्।

(पृष्ठ ४२)

उदजिहीत—(उत्थितोऽभवत्) उठ खड़ा हुआ।

परिबर्हेण—(राजोचितेन परिच्छदेन हस्त्यश्वादिभिः) राजोचित वस्तुओं के द्वारा।

गणशः—(संघशः) इकट्ठे होकर।

अशनिहतः—(वज्राहतः) मानो उस पर वज्र गिर पड़ा हो।

आवर्जितवतीव—(वशीकृतवतीव) मानो वश में कर लिया है।

श्लाघसे—(गौरवं प्रकटयसि) हेकड़ी दिखाती हो।

दास्यपणबन्धेन—(दास्यमेव पणस्तस्य बन्धो नियमस्तेन। यद्यहं मरीचिं

वशीकर्तुं शक्नुयां तदा त्वं मे दासीभविष्यसि, अन्यथाऽहं तव दासीभविष्यामि इति पणं कृत्वेति) दासी होने की शर्त के द्वारा।

अस्मिन्नर्थे प्रावर्तिषि-(भवद्वशीकरणरूपे विषये प्रवृत्ता) आपको लुभाने के काम में लग गयी।

कृतानुशयः-(कृतपश्चात्तापः) इसके द्वारा मैं ठग लिया गया-इस पश्चात्ताप में डूबते-उतराते।

स्वशक्तिनिषिक्तम्-(निजसामर्थ्यनिःक्षिप्तम्) अपनी शक्ति द्वारा उत्पादित।

बन्धक्या-(कुलटया) कुलटा द्वारा।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित क्रियापदों की धातुयें पहचानिये—

न्यषीदत्, प्राणंसीत्, प्रावर्तिषि, न्यवर्तिष्ट।

(पृष्ठ ४३)

त्वदर्थसाधनक्षमः-(तवापहारवर्मणोऽर्थस्य प्रयोजनस्य साधने क्षमः समर्थः) तुम्हारा कार्य-साधन करने में समर्थ।

तमनुशय्य-उसके साथ सोकर।

उदयप्रस्थदावकल्पे-(उदयः उदयाचलः तस्य प्रस्थः सानुः तस्मिन् वनाग्नि-सदृशे) उदयाचल के शिखर पर लगी आग की भाँति।

अरुणार्चिषि-(अरुणा रक्तवर्णा अर्चिषो यस्य तस्मिन्) सूर्य।

पञ्चवीरगोष्ठे-(जानपदसभायाम्) नागरिकों की सभा में।

सन्न्यधिषि-(सन्निहितोऽभवम्) जा पहुँचा।

शिरःशूलस्पर्शनमपदिशन्-(शिरःशूलं शिरोवेदना तस्याः स्पर्शनमनुभव-मपदिशन् ख्यापयन्, शिरोवेदनाव्याजेनेति) सिरदर्द का बहाना बनाकर।

चीवरपिण्डदानादिना–वस्त्र और अन्न आदि के दान द्वारा।

उपसंगृह्य–(वशीकृत्य) वश में करके।

उदारकात्–(धनमित्रात्) धनमित्र द्वारा।

मुषित्वा–(चोरयित्वा) चुराकर।

प्रतिदानम्–बदले में यदि रागमंजरी मुझे मिल जाय।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित पदों का एक-एक पर्याय लिखिये—

नागरजनः, तल्पे, सान्द्रादरः, पणबन्धम्।

(पृष्ठ ४४)

वेशकृच्छ्रात्–(वेश्याव्यसनात्) वेश्या-प्रेम के महादुःख से।

पुनःप्रतितप्ततपःप्रभावप्रत्यापन्नदिव्यचक्षुषम्–(पुनः प्रतितप्तं समाचरितं यत्तपस्तस्य प्रभावेण माहात्म्येन प्रत्यापन्नं पुनः प्राप्तं दिव्यं चक्षुर्येन तादृशम्) पुनः किये गये तप के प्रभाव से जिन्हें फिर से दिव्यदृष्टि मिल चुकी थी।

अवारुणत्–(अरौत्सीत्) आक्रमण कर दिया।

पारग्रामिकं विधिमाचिकीर्षति–पराये राज्य पर चढ़ाई करने पर जो कुछ करना चाहिये वह सब करने की इच्छा करने लगा।

सम्पराये–(युद्धे) संग्राम में।

कौतुकम्–मंगलसूत्र को।

पिनद्धमङ्गलप्रतिसरः–(पिनद्धो बद्धो मङ्गलप्रतिसरो माङ्गलिकहस्तसूत्रं येन सः) जिसने विवाह का मंगलसूत्र बाँध रखा है।

अङ्गराजाभिसरम्–अङ्गराज के सहायक।

उपावर्तय–पीछे भगा दो।

८ द०

उपावृत्तः—जब तुम ऐसा करके लौट आओगे।

उपसमाधीयमानपरिणयोपकरणम्—(उपसमाधीयमानानि सम्पाद्यमानानि परिणयोपकरणानि विवाहोचितद्रव्यजातानि यत्र तत्) विवाहोचित वस्तुओं से भरपूर।

इतस्ततः प्रवेशनिर्गमप्रवृत्तलोकसम्बाधम्—(इतस्ततः समन्तात् प्रवेश-निर्गमेषु गमनागमनेषु प्रवृत्तैर्लोकैस्सम्बाधं सङ्कटम्) चारों ओर से आने-जाने वाले लोगों से खचाखच भरा।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित पदों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिये—

अवारुणत्, अप्रतीक्षमाणः, क्षपावसाने, पौरवृद्धैः।

(पृष्ठ ४५)

एककर्मा—(एकं समानं भवदन्वेषणरूपं कर्म यस्यासौ) मित्रों के काम में हाथ बटाने वाला।

ऊर्मिमालिनेमि—(ऊर्मिमाली समुद्रः नेमिः सीमा यस्य तत्) समुद्रपर्यन्त।

मणिभङ्गनिर्मलाम्भसि—(मणीनां भङ्गश्शकलस्तद्वन्निर्मलमम्भस्तोयं यस्या-स्तस्याम्) हीरे की कनी की भाँति स्वच्छ जल वाली।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य बनाइये—

अविरतरुदितोच्छूनताम्रदृष्टिम्, साहाय्यदानावकाशः।

(पृष्ठ ४६)

पूर्वेषु कामचरः—पूर्वदेश में स्वतन्त्र विचरण करने वाला।

अर्यवर्यस्य—(वैश्यश्रेष्ठस्य) धनिक वैश्य के।

रूपाभिग्राहितः—चोरी की चीजों द्वारा पकड़ा गया।

मण्डलितहस्तकाण्डम्—(मण्डलितः मण्डलाकारः कृतः हस्तकाण्डः शुण्डादण्डो यत्र तत्तथेति क्रियाविशेषणम्) सूँड़ ऊपर उठाये।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य बनाइये—

राजगोपुरोपरितलाधिरूढस्य, जनकण्ठरवद्विगुणितघण्टारवः।

(पृष्ठ ४७)

अनवसितवचने—(अनवसितमसमाप्तं वाक्यं यस्य तस्मिन् सति) जिसकी बात पूरी भी न हुई थी, ऐसे रहते।

उदैरयत्—(ऊर्ध्वीचकार) ऊपर उठाया।

उदास्येत—(उपेक्ष्येत) लोगों द्वारा उपेक्षित हो जाय।

मुक्तसाध्वसेन—(परित्यक्तभयेन) निडर होकर।

निरपेक्षं निग्राह्यः—(निर्विचारं दण्डनीयः) बिना कुछ सोचे दण्डित किया जाय।

पश्चिमो विधिः—अन्तिम संस्कार, दाहकर्म आदि।

काण्डपटीपरिक्षिप्ते—(काण्डपटी जवनिका तया परिक्षिप्ते परिवृते) पर्दे से ढके।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

(१) निम्नलिखित पदों के पर्याय लिखिये—

सङ्कुले, आशीविषः, मुक्तसाध्वसेन, पश्चिमः।

(२) निम्नलिखित वाक्य के अर्थ अपनी संस्कृत में प्रकाशित कीजिये—

(क) त्वया तु मुक्तसाध्वसेन माता मे बोधयितव्या।

(ख) स्त्रीधर्मश्चैषः यददुष्टस्य दुष्टस्य वा भर्तुर्गतिर्गन्तव्येति।

(पृष्ठ ४८)

घोषणस्थाने-(यत्र डिण्डिमेन घोषणा क्रियते तत्र) डिंडिम से जहाँ घोषणा की जाती है ।

उद्धुरध्वनिमहाजनानुयातम्-(उद्धुरोऽतिप्रवृद्धः ध्वनिः शब्दो यस्य तादृशो यो महाजनो जनसमुदायस्तेनानुयातमनुगतम्) जिसके पीछे बहुत शोरगुल मचाती भीड़ चली आ रही थी, उसे ।

मदभ्याशे-(मत्समीपे) मेरे पास ।

अन्धतमसप्रवेशः-काली कोठरी में मौत ।

प्राड्विवाकवाक्यात्-न्यायाधीश के आदेशानुसार ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(क) ततः पितरमुज्जीव्य तदभिरुचितेनाभ्युपायेन चेष्टिष्यामहे ।

(ख) राज्यकामुकस्यास्य ब्राह्मणस्यान्धतमसप्रवेशो न्याय्यः।

(पृष्ठ ४९)

रूढत्रासद्रुतलोकदत्तमार्गः-(रूढ उत्पन्नो यस्त्रासो भयं तेन द्रुतः पलायितो यो लोकस्तेन दत्तो मार्गो यस्य सः) डरकर भागे लोगों द्वारा जिसे रास्ता दे दिया गया था, वह ।

पूर्णभद्रबोधितार्था-(पूर्णभद्रेण बोधितो ज्ञापितोऽर्थो विषयो यस्याः सा) पूर्णभद्र द्वारा सारा वृत्त ज्ञात कर लेने वाली ।

उत्तमाङ्गम्-मस्तक ।

पश्चिमम्-अन्तिम ।

प्राद्रवत्-(पलायिष्ट) भाग गया ।

चण्डाले तु मत्प्रतिषिद्धसकलमन्त्रवादिप्रयासे संस्थिते–जब कि वह जल्लाद मर गया, क्योंकि मेरे मन्त्रबल से कोई भी ओझा-गुनी उसका विष न उतार पाये।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये—

अपकर्ता, कलङ्कयेयम्, क्षितीश्वरः, कालदष्टः।

(पृष्ठ ५०)

अन्वमंस्त–अनुमोदन किया।

दर्भशय्यामधिशाय्य–कुशा की शय्या पर लिटा कर।

मरणमण्डनम्–सती होने के समय के वस्त्राभूषण।

यत्ननिवारितपरिजनाक्रन्दिता–(यत्नेन निवारितं परिजनस्याक्रन्दितं यया सा) जिसने किसी प्रकार अपनी सखी-सहेलियों का रोना-धोना रोकवाया, वह।

वैनतेयतां गतेन–(गारुडविद्यानिपुणेन) झाड़-फूँक में परम प्रवीण।

सहर्षबाष्पगद्गदम्–(हर्षेण आनन्देन सह यद् बाष्पमश्रु तेन गद्गदम्) आनन्दाश्रु से मग्न।

(पृष्ठ ५१)

काद्य नः प्रतिपत्तिः–आज हम लोगों को क्या करना चाहिये ?

अतिविशालप्राकारवलयाम्—(अतिविशालोऽतिविस्तीर्णः प्राकारवलयः प्राचीरमण्डलं यस्य तत्) जिसकी बड़ी ऊँची चहारदिवारी है।

अनुरुध्यन्ते–(अनुमन्यन्ते) सहन कर सकते हैं।

बाह्याभ्यन्तरङ्गान् कोपानुत्पादयिष्यामः–बाह्यकोप (इर्द-गिर्द के शत्रुओं द्वारा आक्रमण) और आभ्यन्तर कोप (प्रजाविप्लव) दोनों करवा देंगे।

पारग्रामिकान् प्रयोगान्–शत्रु-नगरों में विध्वंसकार्य ।

स्वोदवसितभित्तिकोणात्–(स्वस्योदवसितं वासगृहं तस्य भित्तिकोणात् कुड्यैकदेशात्) अपने रहने के घर के एक कोने से ।

उरगास्येन–(सर्पमुखाकारेण उपकरणविशेषेण) कुदाल द्वारा ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित वाक्यों के अर्थों को अपनी संस्कृत में प्रकाशित कीजिये—

(क) जनयिता मे भगवतो मघवतोऽपि भाग्यवन्तमात्मानमजीगणत् ।

(ख) प्रकृतयश्च भूयस्यो न मे व्यसनमनुरुध्यन्ते ।

(पृष्ठ ५२)

अनल्पकन्याजनम्–[न अल्पः अनल्पः (नञ् तत्पु०) अनल्पः कन्याजनो यत्र (बहुव्रीहि) तत्] अनेक कन्याओं से परिपूर्ण ।

पाण्डुशिरसिजा–(शुभ्रकेशी) सफेद बाल वाली ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित पदों के पर्यायवाचक शब्द लिखिये—

पाण्डुशिरसिजा, त्रासदीनम् , दनुजयुद्धतृष्णया ।

(पृष्ठ ५३)

अन्तर्वत्न्यां देव्याम्–जब कि रानी गर्भवती थी ।

कृत्रिमशैलगर्भोत्कीर्णनानामण्डपप्रेक्षागृहे–(कृत्रिमो निर्मितो यः शैलः पर्वतस्तस्य गर्भे मध्ये उत्कीर्णानि विन्यस्तानि नानाविधानि मण्डपानि प्रेक्षागृहाणि नृत्यशालाश्च यत्र तस्मिन्) जिसमें कृत्रिम पर्वत के भीतर अनेक मण्डप और नाट्यगृह बने थे ।

प्रचुरपरिबर्हया–(प्रभूतपरिच्छदया) अनुचर-परिचरों के साथ ।

द्व्यङ्गुलभित्तौ–(अङ्गुलिद्वयपरिमितकुड्ये) दो अङ्गुल चौड़ी बनी दीवार ।

किष्कुविष्कम्भम्–एक वित्ता नाप वाला ।

समकल्प्यत–संकल्प की गई ।

दीपदर्शितबिलपथेन–(दीपालोकप्रदर्शितसुरङ्गमार्गेण) दीपदर्शित सुरङ्ग के मार्ग से ।

(पृष्ठ ५४)

आयसनिगडसन्दितचरणयुगलम्–(आयसनिगडेन लौहबन्धनेन सन्दितं बद्धं चरणयुगलं यस्य तम्) लोहे की सिक्कड़ से जिसके दोनों पैर बँधे हुए हैं ।

निकृष्टाशयम्–(नीचचित्तम्) खोटे विचार वाला ।

भवच्चरणप्रणामप्रायश्चित्तम्–आपके चरणों का प्रणाम करनारूप प्रायश्चित्त।

बहु पराक्रान्तम्–तुमने बहुत पराक्रम किया ।

प्रीतिस्मेरः–(प्रीत्या स्नेहेन स्मेरः ईषद्धसिताननः) प्रसन्नता से मुस्कराता हुआ ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रहवाक्य लिखिये—

दीपदर्शितबिलपथेन, आयसनिगडसन्दितचरणयुगलम्, अवनमितमलिनवदनम्, अश्रुबहलरक्तचक्षुषम् ।

(पृष्ठ ५५)

समाकारणे–(आह्वाने) ।

मिथः–परस्पर ।

यावत्–यावत्कालपर्यन्त ।

स्कन्धावारम्–शिविर (फौज का पड़ाव) ।

(पृष्ठ ५६)

असह्यदुःखोदन्वति—असहनीय दुःखसागर में ।

भवदाज्ञाविधायिनः—(भवदादेशपालकाः) आप की आज्ञा का पालन करने वाले ।

(पृष्ठ ५७)

कथावशेषौ—(मृतौ) मरे हुए ।

पानीयमपि पथि भूत्वा पेयम्—(तत्काल घर से निकल कर) मार्ग में पहुँच कर ही पानी पीना ।

(पृष्ठ ५८)

अतिदुर्घटानि—दुःसाध्य, साहसपूर्ण ।

(पृष्ठ ५९)

मनुजमनोरथाधिकम्—(यन्मनुष्याः मनसापि कल्पयितुं न शक्नुवन्ति तत्) मनुष्य की कल्पना के परे ।

अवाङ्मनसगोचरम्—जो न तो कहा जा सके और न सोचा जा सके ।

एतद्वयःसमुचिते—(वानप्रस्थाश्रमग्रहणयोग्ये वयसि) वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करने की योग्य अवस्था में अर्थात् वृद्धावस्था में ।

अभ्यासार्थं प्रश्न—

(१) निम्नलिखित पदों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए—

भूयासम्, कायक्लेशं विनैव, स्वेच्छया ।

(२) निम्नलिखित वाक्य का भाव अपने शब्दों में संस्कृत में लिखिए—

महर्षेराज्ञामधिगम्य ते पितुर्वानप्रस्थाश्रमाधिगमप्रतिषेधाग्रहमत्यजन् ।



मुद्रकः—विद्याविलास प्रेस, वाराणसी–१

प्राप्तिस्थानम्

चौखम्बा विद्याभवन

पो. बा. नं. ६९, चौक, वाराणसी-१